सूर्यास्त 07:26 | सूर्योदय 05:35
तापमान
अधिकतम 40° | न्यूनतम 33°

राष्ट्रीय हिन्दी/साप्ताहिक

हिन्दुस्तान एकता

वर्ष: 07 | अंक: 19 | पृष्ठ: 04 | मूल्य: ₹1.00

info@hindustanekta.com — कैथल, शनिवार 18 जुलाई, 2026 — RNI-HRHIN/26/A1127

आपकी आवाज हमारी ताकत

आप कोई सामाजिक, धार्मिक आयोजन, प्रेस कॉन्फ्रेंस या किसी संस्था से जुड़ी कोई खबर, खुला नाला है, पानी से भरा गड्ढा है, रोड टूटी या गड्ढे हैं, हादसे का खतरा है इत्यादि खबरें हमारे साथ साझा करना चाहते हैं तो अब दूर नहीं। आपको केवल खबर और खबर से जुड़े हुनिंदा दो फोटो कैप्शन के साथ भेजना होगा। आपकी खबर को प्रमुखता से प्रकाशित किया जाएगा।

ऐसे भेजे

वॉट्सएप कर सकते हैं
9499422208
हमें QR स्कैन कर वेबसाइट पर भी भेज सकते हैं

हरियाणा बना देश की पहली हाइड्रोजन ट्रेन का गवाह

● जींद-सोनीपत रूट पर 10 कोच वाली ट्रेन का संचालन, किराया 5 से 25 रु.

हिन्दुस्तान एकता » जींद

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने शुक्रवार को हरियाणा के जींद से देश की पहली हाइड्रोजन ट्रेन को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। 10 कोच वाली यह ट्रेन जींद- सोनीपत के बीच 89 किलोमीटर की दूरी 14 स्टेशनों से होते हुए करीब दो घंटे में तय करेगी। अधिकतम 75 किलोमीटर प्रति घंटे की रफ्तार से चलने वाली इस ट्रेन का किराया 5 से 25 रुपये के बीच रखा गया है। इसके साथ ही भारत हाइड्रोजन ट्रेन संचालन करने वाला दुनिया का पांचवां देश बन गया है।

इस अवसर पर प्रधानमंत्री ने कहा कि यह दुनिया की सबसे ताकतवर हाइड्रोजन ट्रेन है, जिसे भारतीय इंजीनियरों ने डिजाइन किया है और देश की ही कंपनी ने तैयार किया है। कार्यक्रम के दौरान उन्होंने हरियाणा में स्वास्थ्य, सड़क, रेलवे और पर्यटन से जुड़ी आठ महत्वपूर्ण परियोजनाओं का उद्घाटन और शिलान्यास भी किया। अपने संबोधन में प्रधानमंत्री ने रेलवे के 99 प्रतिशत विद्युतीकरण, स्वच्छता अभियान, 2030 कॉमनवेल्थ गेम्स की मेजबानी की तैयारी तथा 2036 ओलंपिक की मेजबानी के प्रयासों का भी उल्लेख किया। साथ ही उन्होंने जींद से जुड़ी अपनी पुरानी यादों और यहां के घी, बूरा व घेवर का भी जिक्र किया।

कार्यक्रम की प्रमुख बातें...

- **पहली हाइड्रोजन ट्रेन:** जींद- सोनीपत रूट पर संचालन शुरू।
- **भारत की उपलब्धि:** हाइड्रोजन ट्रेन चलाने वाला दुनिया का पांचवां देश।
- **ट्रेन की खासियत:** 10 कोच, 89 किमी सफर, 14 स्टेशन, अधिकतम 75 किमी/घंटा की रफ्तार। **किराया:** 5 से 25 रुपये।
- **रेलवे पर जोर:** पीएम बोले- पिछले 12 वर्षों में देश के 99% रेल नेटवर्क का विद्युतीकरण हुआ।
- **खेलों पर फोकस:** भारत 2030 कॉमनवेल्थ गेम्स की मेजबानी करेगा, 2036 ओलंपिक की मेजबानी के लिए भी प्रयास जारी।
- **स्वच्छता संदेश:** जींदवासियों से स्वच्छता को संस्कार और जीवनशैली बनाने का आह्वान।

8 प्रोजेक्ट्स का उद्घाटन-शिलान्यास

- भारत की पहली हाइड्रोजन ट्रेन का उद्घाटन।
- कुरुक्षेत्र एलिवेटेड रेलवे ट्रैक का उद्घाटन।
- पंडित नेकी राम शर्मा राजकीय मेडिकल कॉलेज, भिवानी का उद्घाटन।
- महर्षि च्यवन मेडिकल कॉलेज एवं राव तुलाराम अस्पताल, नारनौल का उद्घाटन।
- दिल्ली-अमृतसर-कटरा हाईवे (हरियाणा सेक्शन –157.92 किमी) का उद्घाटन।
- अंबाला-काला अंब नेशनल हाईवे का उद्घाटन।
- जींद-गोहाना नेशनल हाईवे का उद्घाटन।
- सिख संग्रहालय, कुरुक्षेत्र का शिलान्यास।
- हांसी-बरवाला नेशनल हाईवे का उद्घाटन।

अयोध्या राम मंदिर चंदे की जांच

यूपी सरकार से मांगी मोहलत, अब 20 जुलाई को सुप्रीम कोर्ट को रिपोर्ट सौंपेगी विशेष जांच दल

एजेंसी » नई दिल्ली

श्री राम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट को मिले दान में कथित वित्तीय अनियमितताओं की जांच एक अहम मोड़ पर पहुंच गई है और स्पेशल इन्वेस्टिगेशन टीम (एसआईटी) सोमवार (20 जुलाई) को सुप्रीम कोर्ट में अंतरिम रिपोर्ट सौंपने वाली है। मिली जानकारी के मुताबिक, एसआईटी को निर्देश दिया गया है कि वह इस मामले से जुड़ी चल रही कार्यवाही के तहत अपनी जांच के नतीजे सीधे सुप्रीम कोर्ट को सौंपे। गौरतलब है कि एसआईटी की जांच के नतीजों से मंदिर के प्रशासन और दान की गिनती करने की व्यवस्था में बड़े बदलावों का रास्ता साफ होने की उम्मीद है। सूत्रों के मुताबिक, एसआईटी ने अपनी जांच पूरी करने और फाइनल रिपोर्ट तैयार करने के लिए उत्तर प्रदेश सरकार से और समय मांगा है। अधिकारियों ने बताया कि जांच में काफी प्रगति हुई है, लेकिन एक विस्तृत रिपोर्ट सौंपने से पहले कथित वित्तीय अनियमितताओं के सभी पहलुओं की जांच के लिए एसआईटी समय की जरूरत है। श्री राम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट के अनुरोध पर 13 जून को यूपी सरकार द्वारा गठित तीन सदस्यीय एसआईटी को शुरू में अपनी जांच पूरी करने के लिए 15 दिन का समय दिया गया था। लेकिन 1 जुलाई को इसके कार्यकाल को 15 दिन और बढ़ा दिया गया था।

यूपी सरकार ने सख्त कार्रवाई का भरोसा दिया

डिप्टी सीएम केशव प्रसाद मौर्य ने कहा कि राज्य सरकार एसआईटी रिपोर्ट का इंतजार कर रही है और दोषी पाए जाने वाले किसी भी व्यक्ति के खिलाफ सख्त कार्रवाई का वादा किया। मौर्य ने कहा, बाकी लोगों की तरह हम भी एसआईटी रिपोर्ट का इंतजार कर रहे हैं। धैर्य रखें और भरोसा रखें, किसी को बख्शा नहीं जाएगा। जो भी इसके लिए दोषी पाया जाएगा, उसे हनुमान जी की गदा का सामना करना पड़ेगा। ट्रस्ट के एक वरिष्ठ अधिकारी ने भी रिपोर्ट का इंतजार होने की पुष्टि की, लेकिन आधिकारिक तौर पर सौंपे जाने से पहले इस पर और टिप्पणी करने से इनकार कर दिया।

न्यूज ब्रीफ

पाकिस्तान में ईंधन का संकट: 2 सप्ताह का पेट्रोल स्टॉक बचा

कैथल » पाकिस्तान एक और फ्यूल सप्लाई संकट का सामना कर रहा है। पेट्रोल का घटता स्टॉक, इंपोर्ट में देरी और पॉलिसी से जुड़ी अड़चनों ने देश की एनर्जी सिक्योरिटी को लेकर चिंता बढ़ा दी है। 'द एक्सप्रेस ट्रिब्यून' के अनुसार, इंडस्ट्री के अधिकारियों ने चेतावनी दी है कि पेट्रोल का स्टॉक घटकर लगभग 379,000 टन रह गया है (इसमें लोकल रिफाइनरियों से मिलने वाली सप्लाई भी शामिल है)। खपत की मौजूदा दर को देखते हुए यह स्टॉक सिर्फ दो सप्ताह के लिए ही काफी है।

पीएम मोदी के नेतृत्व में 12 साल में स्वास्थ्य क्षेत्र में अभूतपूर्व विकास: नड्डा

कैथल » केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्री जेपी नड्डा ने 17 जुलाई को चंडीगढ़ के पीजीआई में एक कार्यक्रम के दौरान प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में भारत के हेल्थकेयर सेक्टर में आए बदलाव को अभूतपूर्व बताया। उन्होंने 2017 की राष्ट्रीय स्वास्थ्य नीति को एक ज्यादा व्यापक और बचाव-केंद्रित हेल्थकेयर मॉडल की दिशा में एक अहम बदलाव के तौर पर रेखांकित किया। प्रधानमंत्री द्वारा हेल्थकेयर प्रोजेक्ट्स के उद्घाटन और शिलान्यास समारोह में मौजूद लोगों को संबोधित करते हुए नड्डा ने कहा कि मोदी के नेतृत्व में पिछले 12 सालों में भारत ने कई क्षेत्रों में जबरदस्त तरक्की की है।

ईरान ने शुरू किया ऑपरेशन नस्र 2

मध्य पूर्व संकट: जॉर्डन में अमेरिकी लड़ाकू विमानों पर मिसाइल हमला

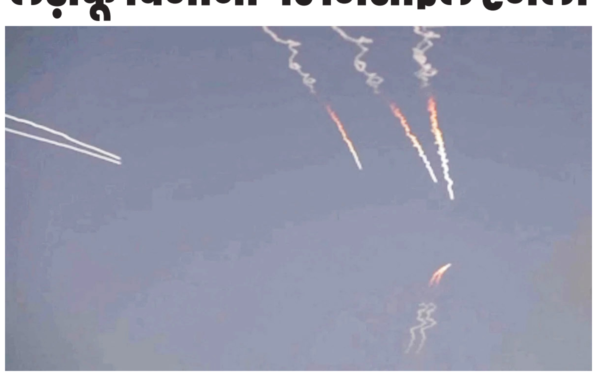

एजेंसी » नई दिल्ली

ईरान ने दावा किया है कि उसने जॉर्डन में तैनात अमेरिकी मिलिट्री एयरक्राफ्ट पर बैलिस्टिक मिसाइल और ड्रोन से हमले किए। ईरान का कहना है कि इन हमलों में कई अमेरिकी फाइटर जेट और हवा में ईंधन भरने वाले एयरक्राफ्ट नष्ट हो गए, जबकि अन्य को गंभीर नुकसान पहुंचा। यह दावा मिडिल ईस्ट में तेजी से बढ़ते तनाव के बीच किया गया है, जो ईरान के अंदर कई जगहों पर अमेरिका द्वारा रात भर किए गए हमलों के बाद पैदा हुआ है। इस्लामिक रिवोल्यूशनरी गार्ड कॉर्प्स (IRGC) की एयरोस्पेस फोर्स के बयान के अनुसार, ये हमले ऑपरेशन नस्र 2 के 14वें चरण के तहत दो चरणों में किए गए। IRGC ने कहा कि इन हमलों में जॉर्डन में मौजूद अमेरिकी फाइटर जेट और हवा में ईंधन भरने वाले एयरक्राफ्ट को निशाना बनाया गया। IRGC ने दावा किया कि अमेरिका के कई टैंकर और लड़ाकू विमान नष्ट हो गए, जबकि कई अन्य को भारी नुकसान पहुंचा। IRGC ने बयान में कहा, इस हमले में कई बैलिस्टिक मिसाइलें और बड़ी संख्या में ड्रोन शामिल थे, जिसके परिणामस्वरूप अमेरिका के कई टैंकर और लड़ाकू जेट नष्ट हो गए और कई अन्य को गंभीर नुकसान पहुंचा।

हालांकि, इन दावों की स्वतंत्र रूप से पुष्टि नहीं हुई है और अमेरिकी अधिकारियों की ओर से भी तुरंत कोई पुष्टि नहीं की गई है। ईरान ने इन हमलों को देश भर में कई जगहों पर रात भर हुए अमेरिकी हमलों का जवाब बताया। ईरान का कहना है कि उन हमलों में कम से कम आठ लोग मारे गए थे।

इसरो के वैज्ञानिक के सामूहिक इस्तीफों पर सरकार की रोक

एजेंसी » नई दिल्ली

हाल के महीनों में 100 से ज्यादा वैज्ञानिकों के अपने इस्तीफ़े या स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति के आवेदन सौंपने की खबरों के बीच, अंतरिक्ष विभाग ने कथित तौर पर भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) के प्रमुख केंद्रों को एक ज्ञापन जारी किया है। इसमें उन्हें निर्देश दिया गया है कि वे गगनयान जैसे अहम मिशनों पर काम कर रहे वैज्ञानिकों और इंजीनियरों के इस्तीफ़े या स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति के अनुरोध स्वीकार न करें। मंगलवार को जारी किया गया यह मेमोरैंडम मुख्य रूप से ग्रुप 'A' के साइंटिफिक और टेक्निकल कर्मचारियों के लिए है। रिपोर्ट के अनुसार, विभाग ने इसरो सेंटर्स को निर्देश दिया है कि वे इन कर्मचारियों के इस्तीफ़े या वॉलंटरी रिटायरमेंट (स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति) के अनुरोधों को सामान्य तौर पर स्वीकार न करें। मेमोरैंडम में कहा गया है कि हाल ही में यह देखा गया है कि इसरो के ग्रुप 'A' के साइंटिफिक/टेक्निकल कर्मचारियों की ओर से वॉलंटरी रिटायरमेंट और इस्तीफ़े के अनुरोधों की बाढ़ सी आ गई है। इनमें वे कर्मचारी भी शामिल हैं जो प्रतिष्ठित गगनयान और अन्य महत्वपूर्ण मिशनों/प्रोजेक्ट्स से जुड़े हैं, जिससे राष्ट्रीय महत्व के प्रोजेक्ट्स के कार्यान्वयन पर गंभीर असर पड़ रहा है।

नवोदय विद्यालय तितरम में कक्षा छठी में दाखिले की प्रक्रिया शुरू, 31 जुलाई तक करें आवेदन

● सत्र 2027-28 के लिए 28 नवंबर को होगी चयन परीक्षा, 5वीं कक्षा के पात्र छात्र उठाएं मौके का फायदा

हिन्दुस्तान एकता » कैथल

पीएम श्री स्कूल जवाहर नवोदय विद्यालय, तितरम (कैथल) में शैक्षणिक सत्र 2027-28 के लिए कक्षा छठी में प्रवेश हेतु ऑनलाइन आवेदन की प्रक्रिया शुरू हो गई है। विद्यालय के प्राचार्य ने बताया कि इच्छुक व योग्य विद्यार्थी नवोदय विद्यालय समिति की आधिकारिक वेबसाइटों पर जाकर आगामी 31 जुलाई तक पूरी तरह निःशुल्क आवेदन कर सकते हैं।

इस चयन परीक्षा में सफल होने वाले विद्यार्थियों को नवोदय विद्यालय में बेहतरीन आवासीय और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्राप्त करने का सुनहरा अवसर मिलेगा। प्राचार्य ने अभिभावकों से अपील की है कि वे अंतिम तिथि का इंतजार किए बिना समय रहते आवेदन प्रक्रिया को सही जानकारियों के साथ पूरा करें।

दाखिले से जुड़ी महत्वपूर्ण जानकारियां...

- **आवेदन की अंतिम तिथि:** 31 जुलाई 2026 तक।
- **परीक्षा की तिथि:** यह चयन परीक्षा 28 नवंबर 2026 (शनिवार) को आयोजित की जाएगी।
- **योग्यता:** आवेदक कैथल जिले का निवासी होना चाहिए और शैक्षणिक सत्र 2026-27 में जिले के ही किसी सरकारी या मान्यता प्राप्त स्कूल में पांचवीं कक्षा में पढ़ रहा हो।
- **आयु सीमा:** विद्यार्थी की जन्मतिथि 1 मई 2015 से 31 जुलाई 2017 के बीच होनी चाहिए।
- **आवेदन वेबसाइट:** www.navodaya.gov.in तथा cbseitms.rcil.gov.in/nvs पर मुफ्त पंजीकरण किया जा सकता है।
- **हेल्प डेस्क (पूछताछ):** किसी भी कार्य दिवस में सुबह 9 बजे से शाम 4 बजे तक इन नंबरों पर संपर्क करें — 9736649490, 9899079302।

जेएंडके के डोडा में एसओजी से सर्विस राइफल छीनने की कोशिश नाकाम, गोली मारी, तीन जवान घायल

एजेंसी » नई दिल्ली

जम्मू-कश्मीर के डोडा जिले के भद्रवाह क्षेत्र में गुरुवार और शुक्रवार की दरमियानी रात सुरक्षा बलों के साथ हुई हिंसक झड़प में एक संदिग्ध की मौत हो गई, जबकि स्पेशल ऑपरेशन ग्रुप (एसओजी) के तीन जवान घायल हो गए। घटना के बाद फरार दूसरे संदिग्ध की तलाश के लिए व्यापक तलाशी अभियान चलाया जा रहा है। पुलिस ने स्पष्ट किया है कि प्रारंभिक जांच में इस मामले का किसी आतंकी गतिविधि से संबंध सामने नहीं आया है। हालांकि पूरे घटनाक्रम की गहन जांच जारी है और सुरक्षा के मद्देनजर इलाके में अतिरिक्त बल तैनात कर दिए गए हैं। पुलिस के अनुसार यह घटना डोडा जिले के ऊंचाई वाले जय वैली क्षेत्र में हुई, जहां संदिग्ध गतिविधियों की सूचना मिलने के बाद एसओजी की टीम ने जय-गंडोह मार्ग पर घात लगाकर निगरानी कर रखी थी। रात करीब 11:30 बजे पुलिस दल ने दो संदिग्ध व्यक्तियों की गतिविधियां देखीं और उन्हें रोककर पूछताछ करने का प्रयास किया। इसी दौरान दोनों पक्षों के बीच कहासुनी शुरू हो गई, जो देखते ही देखते हाथापाई में बदल गई। पुलिस का कहना है कि झड़प के दौरान एक संदिग्ध ने कथित तौर पर एसओजी जवान की सर्विस राइफल छीनने की कोशिश की। हथियार बचाने के प्रयास में हुई धक्का-मुक्की के बीच पुलिस की ओर से एक गोली चली, जो एक संदिग्ध को लग गई। घायल को तत्काल नजदीकी अस्पताल पहुंचाया गया, जहां से उसे बेहतर इलाज के लिए सरकारी मेडिकल कॉलेज (जीएमसी), डोडा रेफर किया गया।

गौरव गोगोई का आरोप- अहम मुद्दों पर जवाबदेही से भाग रही है सरकार

नई दिल्ली » कांग्रेस सांसद गौरव गोगोई ने शुक्रवार को कहा कि पार्टी संसद के आगामी मॉनसून सत्र के दौरान जनता से जुड़े मुद्दों को उठाएगी। उन्होंने सवाल किया कि क्या केंद्र सरकार अयोध्या, शिक्षा व्यवस्था, ऑटोमोबाइल इंडस्ट्री, विदेश नीति और मणिपुर से जुड़े मुद्दों पर ध्यान देगी। एएनआई से बात करते हुए गोगोई ने आरोप लगाया कि सरकार इन अहम मुद्दों पर चर्चा से बचने के लिए शायद संसद को ठीक से काम न करने दे। उन्होंने सरकार की जवाबदेही से बचने की कोशिश पर चिंता जताई।

म्यांमार के तट के पास बंगाल की खाड़ी में दो हादसों पर सनसनीखेज खुलासा

समंदर में मची चीख-पुकार, 500 से ज्यादा रोहिंग्या डूबे

एजेंसी » नई दिल्ली

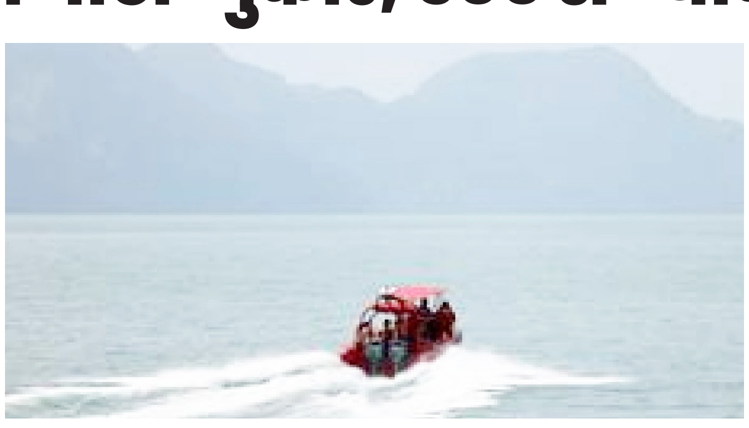

म्यांमार के तट के पास बंगाल की खाड़ी में रोहिंग्या शरणार्थियों को ले जा रही दो नावों के डूबने से 500 से ज्यादा लोगों की मौत की आशंका है। इसके बाद UN ने चेतावनी दी है कि यह हाल के वर्षों में इस सताए हुए अल्पसंख्यक समुदाय से जुड़ी सबसे घातक समुद्री त्रासदियों में से एक हो सकती है। इंटरनेशनल ऑर्गनाइजेशन फ़ॉर माइग्रेशन और यूएन हाई कमिश्नर फ़ॉर रिफ़्यूजीज़ ने कहा कि हालांकि इन घटनाओं और मरने वालों की संख्या की अभी आधिकारिक पुष्टि नहीं हुई है, लेकिन वे जान-माल के इस संभावित भारी नुकसान को लेकर बहुत चिंतित हैं। शुरुआती जानकारी के मुताबिक, ये नावें जून के आखिर में म्यांमार के संघर्ष-ग्रस्त रखाइन राज्य से रवाना हुई थीं। कुछ यात्रियों ने पड़ोसी देश बांग्लादेश के शरणार्थी कैंपों से भी यात्रा की थी। माना जा रहा है कि एक नाव, जिसमें करीब 250 लोग सवार थे, यात्रा शुरू करने के कुछ ही समय बाद संपर्क से बाहर हो गई, जबकि दूसरी नाव, जिसमें अनुमानित 280 यात्री थे, 8 जुलाई को म्यांमार के अयेयारवाडी तट के पास पलट गई।

एजेंसियों ने एक संयुक्त बयान में कहा हालांकि इन घटनाओं और हताहतों की संख्या की अभी तक आधिकारिक पुष्टि नहीं हुई है, लेकिन यूएनएचसीआर और आईओएम संभावित रूप से बड़े पैमाने पर हुई जान-माल की हानि को लेकर बेहद चिंतित हैं। यह दुखद घटना ऐसे समय में हुई है जब रोहिंग्या लोग समुद्र के रास्ते यात्रा करने की कोशिश बहुत कम करते हैं, क्योंकि मॉनसून के कारण बंगाल की खाड़ी का इलाका बेहद खतरनाक हो जाता है। संयुक्त राष्ट्र की एजेंसियों ने कहा कि इस इलाके में मूसलाधार बारिश और बड़े पैमाने पर आई बाढ़ ने इस यात्रा को और भी खतरनाक बना दिया होगा। म्यांमार में सेना की बेरहम कार्रवाई से भागने के बाद, लगभग 12 लाख बिना नागरिकता वाले रोहिंग्या बांग्लादेश के भीड़-भाड़ वाले शरणार्थी कैंपों में रह रहे हैं।

अब 24 जुलाई तक जमा करवा सकते हैं अपने गणना प्रपत्र

● लोकतंत्र की मजबूती के लिए हर पात्र नागरिक बने मतदाता: एडीसी

हिन्दुस्तान एकता » कैथल

पात्र नागरिकों को मतदाता सूची में अपना नाम दर्ज करवाने और विशेष गहन पुनरीक्षण (एसआईआर) अभियान के प्रति जागरूक करने के लिए लघु सचिवालय के सभागार में एक महत्वपूर्ण बैठक आयोजित की गई। बैठक की अध्यक्षता करते हुए एडीसी डॉ. सुशील कुमार ने संबंधित विभागों के अधिकारियों को व्यापक जागरूकता अभियान चलाने के निर्देश दिए।

एडीसी ने कहा कि 18 वर्ष या उससे अधिक आयु के सभी पात्र नागरिक मतदाता सूची में अपना नाम अवश्य दर्ज करवाएं। यदि किसी मतदाता के विवरण में कोई त्रुटि है, तो वे समय रहते सुधार करवा लें। उन्होंने गांवों, शहरी क्षेत्रों, शिक्षण संस्थानों और सार्वजनिक स्थलों पर बीएलओ, आशा एवं आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं के सहयोग से लोगों को प्रेरित करने पर जोर दिया। इस अवसर पर एचएसवीपी के संपदा अधिकारी वकील अहमद, डीडीपीओ रितु लाठर, जीएम रोडवेज कमलजीत सहित विभिन्न विभागों के उच्च अधिकारी उपस्थित रहे।

एसआईआर समय-सीमा

- 24 जुलाई 2026 तकः मतदाता बीएलओ को गणना प्रपत्र दे सकते हैं। साथ ही मतदान केंद्रों के रेशनलाइजेशन की प्रक्रिया पूरी होगी।
- 31 जुलाई 2026: मतदाता सूची के प्रारूप (ड्राफ्ट) का प्रकाशन किया जाएगा।
- 31 जुलाई से 30 अगस्त 2026: मतदाता सूची से संबंधित दावे और आपत्तियां स्वीकार की जाएंगी।
- 28 सितंबर 2026 तकः प्राप्त दावों एवं आपत्तियों का पूरी तरह निपटान कर दिया जाएगा।
- 3 अक्टूबर 2026: मतदाता सूची का अंतिम (फाइनल) प्रकाशन किया जाएगा।

सुविचार

"खुशी संयोग से नहीं, बल्कि चुनाव से मिलती है।"

संपादकीय

भारत में शिक्षा और रोजगार के बीच बढ़ती खाई...

भारत दुनिया की सबसे युवा आबादी वाले देशों में शामिल है। हर वर्ष लाखों छात्र स्कूल, कॉलेज और विश्वविद्यालयों से डिग्री प्राप्त कर रोजगार की उम्मीद लेकर निकलते हैं। इसके बावजूद बड़ी संख्या में शिक्षित युवा बेरोजगार हैं या अपनी योग्यता से कम स्तर के कार्य करने को मजबूर हैं। यह स्थिति स्पष्ट करती है कि देश की शिक्षा व्यवस्था और रोजगार बाजार के बीच एक गहरी खाई मौजूद है। यह केवल आर्थिक समस्या नहीं, बल्कि सामाजिक और राष्ट्रीय विकास से जुड़ा गंभीर विषय है।

वर्तमान शिक्षा व्यवस्था का बड़ा हिस्सा अब भी परीक्षा और डिग्री-केंद्रित है। विद्यार्थियों को सैद्धांतिक ज्ञान तो मिलता है, लेकिन उद्योगों और आधुनिक कार्यस्थलों की जरूरतों के अनुरूप व्यावहारिक प्रशिक्षण, तकनीकी दक्षता और समस्या-समाधान जैसे कौशल अपेक्षित स्तर पर विकसित नहीं हो पाते। परिणामस्वरूप, डिग्री होने के बावजूद अनेक युवा नौकरी के लिए आवश्यक योग्यताओं से वंचित रह जाते हैं। दूसरी ओर, उद्योग जगत तेजी से बदल रहा है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI), ऑटोमेशन, डिजिटल तकनीक, डेटा विश्लेषण, साइबर सुरक्षा और हरित अर्थव्यवस्था जैसे क्षेत्रों में नई संभावनाएं लगातार बढ़ रही हैं। कंपनियों को ऐसे कर्मचारी चाहिए जो नई तकनीकों को समझते हों, टीम में काम कर सकें, प्रभावी संवाद स्थापित कर सकें और बदलती परिस्थितियों के अनुरूप स्वयं को ढाल सकें। दुर्भाग्य से, शिक्षा संस्थानों का पाठ्यक्रम कई बार इन बदलती आवश्यकताओं के अनुरूप समय पर अद्यतन नहीं हो पाता।

ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों के बीच संसाधनों का असमान वितरण भी इस समस्या को बढ़ाता है। महानगरों के विद्यार्थियों को बेहतर शिक्षण, डिजिटल सुविधाएं, इंटर्नशिप और करियर मार्गदर्शन उपलब्ध हो जाता है, जबकि छोटे शहरों और ग्रामीण क्षेत्रों के अनेक छात्र इन अवसरों से वंचित रह जाते हैं। इससे रोजगार की प्रतिस्पर्धा में असमानता और बढ़ जाती है। इस चुनौती का एक अन्य पहलू कौशल विकास से जुड़ा है। सरकार द्वारा कौशल विकास और व्यावसायिक प्रशिक्षण को बढ़ावा देने के लिए अनेक पहलें की गई हैं, लेकिन इनका लाभ हर जरूरतमंद युवा तक समान रूप से नहीं पहुंच पाया है। उद्योग और शिक्षण संस्थानों के बीच मजबूत साझेदारी का अभाव भी रोजगार की तैयारी को प्रभावित करता है। यदि विद्यार्थियों को पढ़ाई के दौरान इंटर्नशिप, अप्रेंटिसशिप, लाइव प्रोजेक्ट और उद्योग आधारित प्रशिक्षण मिले, तो वे रोजगार के लिए अधिक सक्षम बन सकते हैं।

प्रतिभा श्रीवास्तव अंश
लेखिका

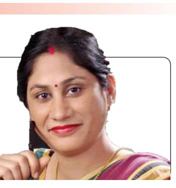

मम्माज बॉय

अजय, विजय, संतोष, प्रभाकर...
उसका कुछ भी नाम हो सकता है,
जिसकी कोई बहन नहीं है... !
वह नहीं देख सकता
माँ को रसोई में अकेले काम करते हुए !
माँ की एक आवाज़
उसके कानों तक नहीं,
सीधे मन तक पहुँचती है...
और वह सब कुछ छोड़कर
दौड़ा चला आता है !
उसे कभी किसी ने नहीं सिखाया
माँ की साड़ी का फॉल
कैसे ठीक किया जाता है,
या पाँच मीटर की साड़ी इस्त्री करने में
कितने जतन की जरूरत पड़ती !
उसे नहीं मालूम
इन दिनों फैशन में क्या है,
फिर भी आईने के सामने खड़ी
माँ से कह देता
ये झुमके पहन लो...
और इस साड़ी पर वो वाले
जूते ज़्यादा अच्छे लगेंगे !
वह जानता है कि
कुछ कामों पर समाज ने
लड़कियों का नाम लिख रखा है...
फिर भी वह उन कामों को करते हुए
ज़रा भी नहीं झिझकता।
उसने यह सब काम
माँ को अकेले करते देखा
और किसी एक दिन
उन कामों को अपने हाथों जोड़ दिया !
वह अपने रिश्ते की भूमिका को
समझ कर चलना सीख रहा है....
धीरे-धीरे वह माँ का बेटा भर नहीं रहता...उसकी
बेटी भी हो जाता है।
माँ उसे कभी-कभार बेटी
तो कभी बेटा कहकर बुलाती रहती
और दुनिया उसे मम्माज बॉय बुलाती... !

हिंदुस्तान एकता कार्यालय

प्रिय पाठकगण,
यदि आप हिन्दुस्तान एकता में अपनी कोई रचना, लेख, कविता, कहानी, ग़ज़ल, समीक्षा, संस्मरण, जीवनी, बाल स्तंभ व महिला स्तंभ आदि प्रकाशित करवाना चाहते हैं तो हर महीने की 2, 9, 16, 23 तारीख तक इस ईमेल पर भेजें तथा देश के हर कोने तक अपनी आवाज को बुलंद करें।
ईमेल:
hindustanektaliterature@gmail.com

हमने हारना नहीं सीखा, इसलिए हो गए स्वार्थी

आर.जे. रेखा
क्रिस्टल वॉयस
आकाशवाणी एफएम
गोल्ड 100.1

आजकल हर जगह एक ही शिकायत सुनाई देती है – लोग बहुत मतलबी हो गए हैं। रिश्ते टूट रहे हैं, दफ्तर में राजनीति बढ़ रही है, स्कूलों में बच्चे एक दूसरे को गिराकर आगे बढ़ना चाहते हैं। सोशल मीडिया पर भी हर पोस्ट के नीचे तुलना, जलन और कटाक्ष। सवाल ये है कि समाज में ये कड़वाहट, जलन और अपराध अचानक क्यों बढ़ गए हैं? क्या मोबाइल, इंटरनेट या बदलते वक्त को दोष देकर हम बच सकते हैं?

जवाब बहुत दूर नहीं है। जवाब हमारे घरों से शुरू होता है।

हम अपने बच्चों को क्या सिखा रहे हैं? जीतना। बस जीतना। चाहे जैसे भी।

बच्चा दौड़ में दूसरे नंबर पर आए तो हम पीठ नहीं थपथपाते। हम गले नहीं लगाते। हम पहला सवाल यही करते हैं, फर्स्ट क्यों नहीं आया? तू हार कैसे गया? शर्म नहीं आई? हम ये नहीं कहते कि हार-जीत जीवन का हिस्सा है। कभी तुम जीतोगे, कभी कोई और। हम ये नहीं सिखाते कि गिरकर उठना भी एक बड़ा हुनर है। असल सीख तो हार के बाद ही शुरू होती है।

हम सिर्फ एक बात दोहराते हैं – तुझे सबसे आगे रहना है। क्लास में टॉप करना है। किसी को अपने से आगे नहीं जाने देना। ट्यूशन के बाद ट्यूशन, कोचिंग के बाद कोचिंग। खेल का समय गया, दोस्तों के साथ हंसने का समय गया। बस रिजल्ट, बस परसेंटेज।

धीरे-धीरे बच्चा ये सीख जाता है कि हारना बुरी बात है। शर्म की बात है। कमजोरी की निशानी है। और जब हारना आता ही नहीं, तो जीतने के लिए कोई भी रास्ता जायज लगने लगता है। पेपर में नकल करके पास होना, दोस्त की पीठ पीछे टीचर से शिकायत करना, ग्रुप प्रोजेक्ट में सारा क्रेडिट खुद लेना, टीममेट की टांग खींचना – ये सब उसी सोच की उपज हैं। उसे लगता है लक्ष्य तक पहुंचना ही सब कुछ है, रास्ता कैसा भी हो।

यही बच्चा बड़ा होकर ऑफिस जाता है। वहां भी उसे प्रमोशन चाहिए, बॉस की तारीफ चाहिए, सबसे तेज दिखना है। अगर कोई सहकर्मी उससे बेहतर कर जाए तो बधाई देने की जगह वो उसे गिराने की सोचता है। उसकी फाइल में कमी निकालता है, उसकी पीठ पीछे बात करता है। क्योंकि बचपन से दिमाग में यही भरा है कि दूसरा आगे बढ़ा मतलब मैं पीछे रह गया। सहयोग की जगह प्रतिस्पर्धा, और प्रतिस्पर्धा की जगह दुश्मनी ले लेती है।

यही सोच घरों और रिश्तों में भी दिखती है। पति-पत्नी की हर छोटी बहस 'मैं सही, तुम गलत' पर खत्म होती है। कोई झुकना नहीं चाहता, कोई माफी नहीं मांगना चाहता। क्योंकि झुकना मतलब हारना। दोस्ती में भी अब कंपटीशन आ गया है – किसकी सैलरी ज्यादा, किसकी कार बड़ी, किसके बच्चे किस स्कूल में। पहले दोस्त मिलते थे बात करने, अब मिलते हैं तुलना करने।

जब समाज का हर व्यक्ति सिर्फ मैं को केंद्र में रखेगा, तो स्वार्थ बढ़ेगा ही। फिर हम सहानुभूति नहीं रखेंगे। मदद नहीं करेंगे। क्योंकि मदद करने का मतलब है मैं को थोड़ा भूलना और दूसरों के बारे में सोचना, और हम ये करना ही भूल गए। लिफ्ट में किसी के लिए दरवाजा रोकना, सड़क पर किसी बूढ़े को सड़क पार कराना, ऑफिस में नए को गाइड करना – ये छोटे काम भी हमें बोझ लगते हैं।

इसी का नतीजा है बढ़ते अपराध, बढ़ती जलन, बढ़ती कड़वाहट। एक छात्र नंबर कम आने पर टूट जाता है, डिप्रेशन में चला जाता है। एक कर्मचारी प्रमोशन न मिलने पर गलत रास्ता चुन लेता है, रिश्वत देने लगता है। एक पड़ोसी दूसरे की तरक्की देखकर चैन से नहीं सो पाता, उसकी टांग खींचने की साजिश करता है। हम जीत तो रहे हैं, पर भीतर से खाली होते जा रहे हैं।

समस्या ये नहीं कि लोग बुरे हैं। समस्या ये है कि हमने उन्हें इंसान बनने से पहले मशीन बना दिया। एक ऐसी मशीन जिसे सिर्फ जीत का कोड दिया गया है। फेलियर का बटन ही नहीं दिया। और जब सिस्टम में फेलियर हैंडल ही नहीं होगा, तो सिस्टम क्रैश करेगा ही।

तो समाधान क्या है? समाधान घर से शुरू होगा। स्कूल से शुरू होगा। हमारी परवरिश से शुरू होगा।

माता-पिता को अपनी सोच बदलनी होगी। बच्चों को ट्रॉफी से पहले चरित्र देना होगा। नंबर से पहले नीयत देखनी होगी। जीत से पहले इंसानियत देनी होगी। हमें समझना होगा कि हम बच्चे नहीं, भविष्य गढ़ रहे हैं।

» बच्चों को इंसान बनाने के 5 तरीके

1. **हार को Celebrate करो।** रेस में 2nd आए तो बोलो कोशिश के लिए शाबाश। कोई बात नहीं, अगली बार और मेहनत करेंगे। सिर्फ ट्रॉफी मत देखो। मेहनत, ईमानदारी और जज्बा देखो। हार के बाद जो बच्चा फिर से उठता है, वही असली विजेता है।
2. **तुमसे बेहतर कोई और भी हो सकता है ये normal है...** तुलना मत करो। पड़ोसी के बेटे को देखो कहना बंद करो। हर बच्चा अलग है। किसी की ताकत पढ़ाई है, किसी की खेल। तुलना से आत्मविश्वास मरता है और जलन पैदा होती है।
3. **Teamwork सिखाओ।** घर के काम सब मिलकर करो। खाना सब मिलकर बनाओ, सफाई सब मिलकर करो। क्रेडिट बांटना सिखाओ। उसे बताओ कि अकेले दौड़ जीत सकते हो, पर मैराथन टीम से ही पूरी होती है।
4. **गलती मानना सिखाओ।** अगर आप गलत हो तो बच्चे के सामने Sorry बोलो। ईगो मत दिखाओ। जब बच्चा देखेगा कि बड़े भी गलती मानते हैं, तो वो भी झूठ और बहाने नहीं बनाएगा।
5. **जीत से ज्यादा किरदार जरूरी है।** नंबर ही नहीं, कभी-कभी ये भी पूछो आज तुमने किसी की मदद भी की या नहीं? किसी का दिल तो नहीं दुखाया? किसी कमजोर का साथ दिया? मार्कशीट के साथ कैरेक्टर शीट भी चेक करो।

बच्चों को बताना होगा कि हारना कमजोरी नहीं है। मैदान में आखिरी नंबर पर आने वाला बच्चा भी उतना ही बहादुर है जितना पहला। वो भी दौड़ा, वो भी गिरा, वो भी उठा। उससे पूछिए, खेले कैसे? मजा आया? क्या सीखा? नंबर बाद में पूछिए।

उन्हें सिखाइए कि दूसरों की जीत में खुश होना भी जीत है। ताली बजाना सीखो। टीम में काम करना, क्रेडिट बांटना, गलती मानना, माफी मांगना – ये सब असली ताकत हैं। ये डिग्री में नहीं मिलते, ये घर से आते हैं।

उन्हें बताइए कि जिंदगी 100 मीटर की दौड़ नहीं है। ये मैराथन है। और मैराथन में वही जीतता है जो रुक-रुक कर गिरे हुए का हाथ भी थामता चले, पानी पिलाता चले, साथ चलता चले। अकेला तेज दौड़ने वाला बीच में ही दम तोड़ देता है।

(यह लेखिका के निजी विचार है)

भारतीय अंतरिक्ष में निजी क्षेत्र की ऊंची उड़ान

महेन्द्र तिवारी, भूतपूर्व वायुसैनिक, संप्रति राष्ट्रीय अभिलेखागार, नई दिल्ली में कार्यरत

भारत के अंतरिक्ष कार्यक्रम के इतिहास में 18 जुलाई का दिन एक नए युग की शुरुआत का प्रतीक बनने जा रहा है। श्रीहरिकोटा स्थित सतीश धवन अंतरिक्ष केंद्र से भारतीय स्पेस-टेक स्टार्टअप स्काईरूट एयरोस्पेस द्वारा विकसित स्वदेशी विक्रम-1 रॉकेट अपनी पहली कक्षीय उड़ान के लिए तैयार है। यह केवल एक रॉकेट का प्रक्षेपण नहीं, बल्कि भारत के अंतरिक्ष क्षेत्र में निजी भागीदारी, तकनीकी आत्मनिर्भरता और नवाचार की नई उड़ान का उद्घोष है। यह मिशन इस बात का प्रमाण है कि भारत अब सरकारी संस्थानों के साथ-साथ निजी कंपनियों की क्षमता के बल पर भी वैश्विक अंतरिक्ष अर्थव्यवस्था में अपनी मजबूत उपस्थिति दर्ज कराने के लिए तैयार है।

अब तक भारतीय अंतरिक्ष कार्यक्रम की सफलता का आधार भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) रहा है। सीमित संसाधनों के बावजूद इसरो ने चंद्रयान, मंगलयान, आदित्य-एल1 और अनेक उपग्रह अभियानों के माध्यम से विश्व में भारत की वैज्ञानिक प्रतिष्ठा को नई ऊंचाइयों तक पहुंचाया है। किंतु बदलते वैश्विक परिदृश्य में केवल सरकारी एजेंसियों के बल पर तेजी से बढ़ते अंतरिक्ष बाजार की मांग पूरी करना संभव नहीं था। इसी आवश्यकता को देखते हुए केंद्र सरकार ने वर्ष 2020 में अंतरिक्ष क्षेत्र को निजी कंपनियों के लिए खोलने का ऐतिहासिक निर्णय लिया। आज विक्रम-1 का प्रक्षेपण उसी दूरदर्शी नीति का प्रत्यक्ष परिणाम है। स्काईरूट एयरोस्पेस भारत की अग्रणी निजी अंतरिक्ष कंपनियों में शामिल है। इसके रॉकेट का नाम भारतीय अंतरिक्ष कार्यक्रम के जनक डॉ. विक्रम साराभाई के सम्मान में रखा गया है। विक्रम-1 अत्याधुनिक तकनीकों से लैस एक बहु-चरणीय प्रक्षेपण यान है, जिसे विशेष रूप से छोटे उपग्रहों को पृथ्वी की निचली कक्षा (लो अर्थ ऑर्बिट) में स्थापित करने के लिए विकसित किया गया है। इसकी सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इसके कई महत्वपूर्ण पुर्जों का निर्माण थ्री-डी प्रिंटिंग तकनीक से किया गया है। इससे निर्माण लागत कम होती है, समय की बचत होती है और उत्पादन अधिक सटीक बनता है। इसके अलावा रॉकेट का ढांचा कार्बन फाइबर कंपोजिट से निर्मित है, जो हल्का होने के साथ-साथ अत्यधिक मजबूत भी है। हल्का रॉकेट अधिक पेलोड ले जाने में सक्षम होता है, जिससे उसकी व्यावसायिक उपयोगिता बढ़ जाती है।

विक्रम-1 की उड़ान को विशेष महत्व इसलिए भी प्राप्त है क्योंकि यह एक कक्षीय मिशन (Orbital Mission) है। नवंबर 2022 में स्काईरूट ने विक्रम-एस नामक रॉकेट का सफल उप-कक्षीय (Sub-orbital) परीक्षण किया था। उप-कक्षीय उड़ान में रॉकेट अंतरिक्ष की सीमा तक पहुंचकर वापस लौट आता है, जबकि कक्षीय मिशन में रॉकेट पृथ्वी की परिक्रमा करने योग्य गति प्राप्त करता है और अपने साथ ले जाए गए उपग्रहों को निर्धारित कक्षा में स्थापित करता है। यह प्रक्रिया कहीं अधिक जटिल और चुनौतीपूर्ण होती है। इसमें नेविगेशन प्रणाली, इंजन संचालन और प्रक्षेपण की प्रत्येक अवस्था का अत्यंत सटीक होना आवश्यक है। यदि यह मिशन सफल रहता है, तो भारत का निजी क्षेत्र पहली बार स्वतंत्र रूप से उपग्रहों को कक्षा में स्थापित करने की क्षमता हासिल कर लेगा।

आज पूरी दुनिया में छोटे उपग्रहों की मांग तेजी से बढ़ रही है। संचार, इंटरनेट सेवाएं, मौसम पूर्वानुमान, कृषि, रक्षा, आपदा प्रबंधन और पृथ्वी अवलोकन जैसे अनेक क्षेत्रों में छोटे उपग्रहों का उपयोग बढ़ा है। पारंपरिक बड़े रॉकेटों के माध्यम से ऐसे उपग्रहों को प्रक्षेपित करने में लंबा इंतजार करना पड़ता है, क्योंकि उन्हें बड़े सरकारी मिशनों के साथ भेजा जाता है। स्काईरूट जैसी कंपनियां इस समस्या का समाधान प्रस्तुत करती हैं। विक्रम-1 जैसे प्रक्षेपण यान ग्राहकों को अपेक्षाकृत कम लागत पर और कम समय में ऑन-डिमांड लॉन्च की सुविधा उपलब्ध करा सकते हैं। इससे भारत वैश्विक वाणिज्यिक प्रक्षेपण बाजार में एक मजबूत प्रतिस्पर्धी के रूप में उभर सकता है।

आर्थिक दृष्टि से भी यह मिशन अत्यंत महत्वपूर्ण है। वर्तमान में वैश्विक अंतरिक्ष अर्थव्यवस्था का आकार लगातार बढ़ रहा है और आने वाले वर्षों में इसके कई खरब डॉलर तक पहुंचने का अनुमान है। भारत की हिस्सेदारी अभी सीमित है, किंतु निजी क्षेत्र की सक्रिय भागीदारी से इसमें उल्लेखनीय वृद्धि की संभावना है। सफल निजी प्रक्षेपण विदेशी निवेश को आकर्षित करेंगे, अंतरराष्ट्रीय ग्राहकों का विश्वास बढ़ाएंगे और भारत को कम लागत वाले विश्वसनीय लॉन्चिंग हब के रूप में स्थापित करेंगे।

इसका एक महत्वपूर्ण सामाजिक और औद्योगिक प्रभाव भी है। निजी अंतरिक्ष उद्योग के विस्तार से एयरोस्पेस इंजीनियरिंग, कृत्रिम बुद्धिमत्ता, रोबोटिक्स, उन्नत विनिर्माण, सॉफ्टवेयर विकास, परीक्षण सुविधाओं और ग्राउंड स्टेशन संचालन जैसे क्षेत्रों में हजारों नए रोजगार सृजित होंगे। इससे देश की प्रतिभाओं को विदेश जाने के बजाय भारत में ही विश्वस्तरीय अवसर प्राप्त होंगे। साथ ही, छोटे और मध्यम उद्योगों को भी अंतरिक्ष क्षेत्र की आपूर्ति श्रृंखला से जुड़ने का अवसर मिलेगा, जिससे संपूर्ण औद्योगिक पारिस्थितिकी तंत्र मजबूत होगा। इस सफलता के पीछे सरकार द्वारा स्थापित इन-स्पेस (IN-SPACe) जैसी संस्थाओं की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। इन-स्पेस निजी कंपनियों को आवश्यक अनुमतियां, समन्वय और नीति समर्थन प्रदान करती है, जबकि इसरो अपनी तकनीकी विशेषज्ञता और बुनियादी ढांचे का सहयोग उपलब्ध कराता है। यह मॉडल दर्शाता है कि भारत में सार्वजनिक और निजी क्षेत्र प्रतिस्पर्धी नहीं, बल्कि विकास के साझेदार बनकर कार्य कर रहे हैं।

(यह लेखक के निजी विचार है)

जब नौकरशाही खुद ही कटघरे में खड़ी हो जाए

डॉ. सत्यवान सौरभ
कवि, सामाजिक विचारक एवं स्तंभकार, आकाशवाणी एवं टीवी पेनालिस्ट

हरियाणा की प्रशासनिक व्यवस्था इन दिनों ऐसे घटनाक्रमों के कारण चर्चा में है, जिन्होंने भारतीय नौकरशाही की विश्वसनीयता, पारदर्शिता और जवाबदेही पर गंभीर सवाल खड़े कर दिए हैं। भारतीय प्रशासनिक सेवा (आईएएस) को शासन-प्रशासन की रीढ़ माना जाता है। इन अधिकारियों से अपेक्षा होती है कि वे राजनीतिक परिवर्तन से ऊपर उठकर संविधान, कानून और जनहित के अनुरूप निष्पक्ष निर्णय लें। लेकिन जब उसी सेवा के अधिकारी एक-दूसरे पर आरोप लगाने लगें, जांच एजेंसियों के सामने एक-दूसरे की भूमिका पर सवाल उठाएं और प्रशासनिक तंत्र के भीतर अविश्वास का माहौल बन जाए, तो यह केवल व्यक्तिगत विवाद नहीं रह जाता, बल्कि पूरी व्यवस्था की साख प्रभावित होती है।

हाल के घटनाक्रम में हरियाणा के कुछ वरिष्ठ आईएएस अधिकारियों के विरुद्ध वित्तीय अनियमितताओं के मामलों में कार्रवाई हुई है। कुछ अधिकारियों की गिरफ्तारी हुई, जबकि अन्य के खिलाफ भ्रष्टाचार निवारण अधिनियम के तहत अभियोजन की स्वीकृति दी गई। इस मामले की सबसे उल्लेखनीय बात यह रही कि प्रशासनिक सेवा के भीतर परंपरागत एकजुटता दिखाई नहीं दी। कई अधिकारियों ने अपने बचाव में दूसरे अधिकारियों की भूमिका पर प्रश्न उठाए, फाइल नोटिंग, मौखिक निर्देश और निर्णय प्रक्रिया को लेकर नए विवाद सामने आए। इससे यह संदेश गया कि प्रशासनिक सेवा के भीतर विश्वास और सामूहिक उत्तरदायित्व की भावना कमजोर पड़ रही है।

यह मामला केवल हरियाणा तक सीमित नहीं माना जाना चाहिए। पिछले कुछ वर्षों में देश के विभिन्न राज्यों में नौकरशाही, राजनीतिक नेतृत्व, जांच एजेंसियों और प्रशासनिक जवाबदेही को लेकर बहस तेज हुई है। लेकिन हरियाणा का मामला इसलिए अलग है क्योंकि यहां विवाद सरकार और अधिकारियों के बीच नहीं, बल्कि स्वयं अधिकारियों के बीच खुलकर सामने आया है। इससे उस संस्थागत संस्कृति पर प्रश्न उठे हैं, जो गोपनीयता, अनुशासन और पारस्परिक विश्वास पर आधारित मानी जाती है।

लोकतंत्र में कोई भी अधिकारी कानून से ऊपर नहीं हो सकता। यदि किसी अधिकारी ने भ्रष्टाचार किया है, सरकारी धन का दुरुपयोग किया है या अपने अधिकारों का गलत इस्तेमाल किया है, तो उसके विरुद्ध निष्पक्ष और विधिसम्मत कार्रवाई होना आवश्यक है। वहीं यह भी उतना ही जरूरी है कि जांच पूरी तरह पारदर्शी, निष्पक्ष और राजनीतिक प्रभाव से मुक्त दिखाई दे। न्याय केवल होना ही नहीं चाहिए, बल्कि जनता को यह विश्वास भी होना चाहिए कि न्याय निष्पक्ष तरीके से किया गया है।

इस पूरे घटनाक्रम ने प्रशासनिक निर्णय प्रक्रिया की कमजोरियों को भी उजागर किया है। सरकारी फाइलों में अंतिम हस्ताक्षर करने वाला अधिकारी ही हमेशा अकेला जिम्मेदार नहीं होता। किसी भी निर्णय के पीछे कई स्तरों की प्रशासनिक प्रक्रिया, सलाह, टिप्पणियां और अनुमोदन शामिल होते हैं। इसलिए जांच का उद्देश्य वास्तविक जिम्मेदारी तय करना होना चाहिए, न कि केवल कुछ अधिकारियों को दोषी ठहरा देना। वहीं अधिकारियों के लिए भी यह उचित नहीं कि वे सामूहिक निर्णय का हवाला देकर व्यक्तिगत जवाबदेही से बचने का प्रयास करें।

आज भी शासन व्यवस्था में कई महत्वपूर्ण निर्णय मौखिक निर्देशों, अनौपचारिक बैठकों और टेलीफोनिक बातचीत के आधार पर आगे बढ़ जाते हैं। सामान्य परिस्थितियों में यह प्रक्रिया सुविधाजनक लग सकती है, लेकिन किसी विवाद की स्थिति में यही मौखिक निर्देश सबसे बड़ा विवाद बन जाते हैं। इसलिए समय की मांग है कि सभी महत्वपूर्ण प्रशासनिक और वित्तीय निर्णयों का स्पष्ट लिखित रिकॉर्ड रखा जाए, डिजिटल ट्रैकिंग व्यवस्था लागू हो और प्रत्येक स्तर पर जवाबदेही सुनिश्चित की जाए।

इस घटनाक्रम का प्रभाव ईमानदार अधिकारियों के मनोबल पर भी पड़ सकता है। यदि उन्हें यह आशंका रहे कि किसी सामूहिक निर्णय पर भविष्य में उन्हें भी कठघरे में खड़ा किया जा सकता है, तो वे निर्णय लेने से बचने लगेंगे। दूसरी ओर, यदि भ्रष्टाचार के मामलों में कठोर कार्रवाई नहीं होगी, तो जनता का विश्वास कमजोर होगा। इसलिए प्रशासनिक व्यवस्था में संतुलन बनाए रखना आवश्यक है—ईमानदार अधिकारियों को संस्थागत संरक्षण मिले और दोषी अधिकारियों को कानून के अनुसार दंड।

हरियाणा का यह मामला प्रशासनिक सुधारों की आवश्यकता को भी रेखांकित करता है। फाइलों का पूर्ण डिजिटलीकरण, समयबद्ध ऑडिट, स्वतंत्र सतर्कता तंत्र, पारदर्शी निर्णय प्रक्रिया और उत्तरदायित्व आधारित प्रशासन अब केवल विकल्प नहीं, बल्कि आवश्यकता बन चुके हैं। इससे न केवल भ्रष्टाचार की संभावनाएं कम होंगी, बल्कि बाद में जिम्मेदारी तय करना भी आसान होगा।

साथ ही राजनीतिक नेतृत्व और नौकरशाही के संबंधों में भी स्पष्ट संवैधानिक संतुलन आवश्यक है। लोकतंत्र में नीति निर्माण सरकार का अधिकार है, जबकि उसका निष्पक्ष और विधिसम्मत क्रियान्वयन प्रशासनिक सेवा की जिम्मेदारी है। यदि यह संतुलन बिगड़ता है, तो शासन व्यवस्था की निष्पक्षता और विश्वसनीयता दोनों प्रभावित होती हैं। भारतीय प्रशासनिक सेवा ने देश के विकास, आपदा प्रबंधन, चुनाव संचालन, कानून-व्यवस्था और जनकल्याणकारी योजनाओं के सफल क्रियान्वयन में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। कुछ मामलों के आधार पर पूरी सेवा की छवि पर प्रश्नचिह्न लगाना उचित नहीं होगा। फिर भी ऐसे प्रकरण यह संकेत देते हैं कि प्रशासनिक व्यवस्था को समय-समय पर आत्ममंथन और सुधार की आवश्यकता है।

(यह लेखक के निजी विचार है)

महंगाई, दोहरी आय और बदलता परिवार...

डॉ. प्रियंका सौरभ,
लेखिका

आज यदि किसी मध्यमवर्गीय परिवार से उसकी सबसे बड़ी चिंता पूछी जाए, तो जवाब लगभग एक जैसा मिलेगा—महंगी शिक्षा, घर खरीदने का सपना, बढ़ते स्वास्थ्य खर्च और लगातार बढ़ती महंगाई। एक साधारण नौकरीपेशा व्यक्ति वर्षों तक बचत करने के बाद भी अपना घर नहीं खरीद पाता। निजी स्कूलों की फीस लगातार बढ़ रही है और चिकित्सा सेवाएं भी आम आदमी की पहुंच से दूर होती जा रही हैं। ऐसे में यह सवाल उठना स्वाभाविक है कि आखिर इन समस्याओं की जड़ क्या है?

हाल के वर्षों में एक विचार तेजी से चर्चा में आया है कि इन आर्थिक चुनौतियों का प्रमुख कारण महिलाओं का बड़ी संख्या में कार्यक्षेत्र में आना है। तर्क दिया जाता है कि जब पति-पत्नी दोनों कमाने लगे, तो परिवारों की आय बढ़ी और बाजार ने इसका लाभ उठाकर मकानों, स्कूलों तथा अन्य आवश्यक सेवाओं के दाम बढ़ा दिए। कुछ लोग यह भी मानते हैं कि महिलाओं के रोजगार से पारिवारिक जीवन प्रभावित हुआ, बच्चों के साथ बिताया जाने वाला समय घटा और पारिवारिक संरचना कमजोर हुई। पहली नजर में यह तर्क कुछ लोगों को सही लग सकता है, क्योंकि आज अधिकांश शहरी परिवारों में एक आय से घर चलाना कठिन हो गया है। लेकिन किसी भी सामाजिक और आर्थिक परिवर्तन को केवल एक कारण से जोड़ना उचित नहीं होगा। अर्थव्यवस्था अनेक कारकों से प्रभावित होती है और महंगाई या जीवन-यापन की बढ़ती लागत के पीछे भी कई संरचनात्मक कारण हैं।

सबसे पहले आवास की बात करें। भारत में मकानों की कीमतें केवल परिवारों की आय बढ़ने से नहीं बढ़ीं। तेजी से बढ़ते शहरीकरण, सीमित भूमि, रियल एस्टेट में निवेश, निर्माण लागत, सरकारी नीतियों और आसान बैंक ऋण ने भी संपत्ति के दाम बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। यदि महिलाओं का रोजगार ही इसका मुख्य कारण होता, तो हर उस देश में जहां महिलाओं की श्रम भागीदारी अधिक है, आवास सबसे महंगा होना चाहिए। वास्तविकता इससे कहीं अधिक जटिल है।

इसी प्रकार शिक्षा की बढ़ती लागत के पीछे भी कई कारण हैं। निजी शिक्षा का विस्तार, आधुनिक सुविधाओं की प्रतिस्पर्धा, अंग्रेजी माध्यम का आकर्षण, तकनीकी संसाधनों पर खर्च, शिक्षकों के वेतन और शिक्षा के बढ़ते व्यवसायीकरण ने फीस को लगातार बढ़ाया है। इसलिए यह कहना कि केवल महिलाओं के नौकरी करने से स्कूलों की फीस बढ़ गई, आर्थिक तथ्यों का अत्यधिक सरलीकरण होगा।

हालांकि इस बहस के पीछे एक वास्तविक चिंता जरूर है—परिवारों में समय की कमी और बदलती जीवनशैली। पहले संयुक्त परिवारों में बच्चों की देखभाल और बुजुर्गों की सेवा की जिम्मेदारियां साझा होती थीं। आज छोटे परिवारों में पति-पत्नी दोनों के कार्यरत होने से समय का दबाव बढ़ा है। बच्चों के साथ बिताया जाने वाला समय कम हुआ है और तनाव भी बढ़ा है। लेकिन इन समस्याओं का समाधान महिलाओं को घर तक सीमित करना नहीं, बल्कि ऐसी नीतियां बनाना है जो परिवार और कार्य के बीच बेहतर संतुलन स्थापित करें।

इतिहास भी यह नहीं कहता कि महिलाएं केवल घर तक सीमित थीं। खेती, पशुपालन, हस्तशिल्प, व्यापार और पारिवारिक व्यवसायों में महिलाओं का योगदान सदियों से रहा है। अंतर केवल इतना है कि पहले उनके अधिकांश कार्यों को आर्थिक रूप से नहीं आंका जाता था, जबकि आज वही योगदान वेतनभोगी रोजगार के रूप में दिखाई देता है। यह भी स्वीकार करना होगा कि घरेलू कार्य का महत्व किसी भी वेतनभोगी नौकरी से कम नहीं है। घर संभालना, बच्चों का पालन-पोषण और बुजुर्गों की देखभाल समाज की बुनियादी जरूरतें हैं। यदि कोई महिला या पुरुष यह भूमिका निभाता है, तो उसका सम्मान होना चाहिए। वहीं यदि कोई महिला अपनी शिक्षा और क्षमता के अनुसार नौकरी करना चाहती है, तो उसके निर्णय का भी समान सम्मान होना चाहिए। वास्तविक सशक्तिकरण का अर्थ विकल्प की स्वतंत्रता है, न कि किसी एक भूमिका को सभी पर थोप देना।

आर्थिक दृष्टि से देखें तो महिलाओं की भागीदारी देश की विकास यात्रा के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। शिक्षा, स्वास्थ्य, बैंकिंग, सूचना प्रौद्योगिकी, प्रशासन और विज्ञान जैसे क्षेत्रों में महिलाओं का योगदान लगातार बढ़ा है। यदि बड़ी संख्या में महिलाएं कार्यबल से बाहर हो जाएं, तो इसका असर केवल परिवारों पर नहीं, बल्कि राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था, उत्पादन और विकास पर भी पड़ेगा। वास्तविक समस्या कहीं अधिक गहरी है। पिछले वर्षों में शिक्षा और स्वास्थ्य जैसी मूलभूत सेवाओं का तेजी से निजीकरण हुआ है। संपत्ति कुछ हाथों में केंद्रित होती गई, महानगरों में भूमि महंगी होती गई और आवास निवेश का साधन बन गया।

(यह लेखिका के निजी विचार है)

न्यूज ब्रीफ

मोदी सरकार को घेरेगी कांग्रेस, राम मंदिर-पेपर लीक पर उठाएगी सवाल

नई दिल्ली » कांग्रेस ने गुरुवार को कहा कि 20 जुलाई से शुरू होने वाले संसद के मॉनसून सत्र के दौरान वह कई मुद्दों पर नरेंद्र मोदी सरकार को घेरेगी। इन मुद्दों में राम मंदिर के लिए मिले दान में कथित चोरी, पेपर लीक, शिक्षा व्यवस्था का सिस्टमैटिक तौर पर खराब होना, महंगाई और विदेश नीति शामिल हैं। पार्टी ने यह भी घोषणा की कि वह परिसीमन और मंत्रियों व मुख्यमंत्रियों को हटाने से जुड़े प्रस्तावित संविधान संशोधन बिलों का, साथ ही सत्र के दौरान पेश किए जाने वाले कई अन्य कानूनों का भी कड़ा विरोध करेगी।

परिसीमन विधेयक का कांग्रेस करेगी पुरजोर विरोध, विपक्ष को एकजुट रखेंगे: जयराम

नई दिल्ली » कांग्रेस नेता जयराम रमेश ने गुरुवार को कहा कि अगर संसद के आगामी मॉनसून सत्र में प्रस्तावित परिसीमन विधेयक को फिर से पेश किया जाता है, तो पार्टी इसका पुरजोर विरोध करेगी। उन्होंने आरोप लगाया कि केंद्र सरकार एक ऐसे उपाय के लिए समर्थन जुटाने की कोशिश कर रही है, जिसे पहले लोकसभा में ज़रूरी दो-तिहाई बहुमत नहीं मिल पाया था। कांग्रेस संसदीय रणनीति समूह की बैठक के बाद एक प्रेस कॉन्फ्रेंस को संबोधित करते हुए, रमेश ने कहा कि पार्टी ने उन बिलों पर विस्तार से चर्चा की है जिन्हें सत्र के दौरान पेश किए जाने की संभावना है।

जम्मू से 4600 भक्तों का नया जत्था रवाना

अमरनाथ यात्रा का उत्साह चरम पर, 3.45 लाख कर चुके दर्शन

एजेंसी » जम्मू

जम्मू के भगवती नगर यात्री निवास से शुक्रवार तड़के वार्षिक अमरनाथ यात्रा के लिए कड़े सुरक्षा इंतजामों के बीच 4,640 श्रद्धालुओं का एक नया जत्था रवाना हुआ। अधिकारियों ने यह जानकारी दी। अधिकारियों ने बताया कि अब तक 3.45 लाख से अधिक श्रद्धालु 3,880 मीटर की ऊंचाई पर स्थित पवित्र गुफा मंदिर में भगवान शिव के दर्शन कर चुके हैं।

अधिकारियों ने बताया कि 171 वाहनों के काफिले में रवाना हुए 16वें जत्थे में 1,626 श्रद्धालु मध्य कश्मीर के गांदरबल जिले में स्थित छोटे बालटाल मार्ग से, जबकि 3,014 श्रद्धालु दक्षिण कश्मीर के अनंतनाग जिले में स्थित पारंपरिक पहलगाम मार्ग से यात्रा करेंगे। अधिकारियों के अनुसार, बालटाल मार्ग पर जाने वाला काफिला रात 2:42 बजे आधार शिविर से रवाना हुआ, जबकि पहलगाम मार्ग का काफिला इसके बाद रात 3:11 बजे निकला। अधिकारियों ने बताया कि जत्थे के रवाना होने के साथ ही इस वर्ष की अमरनाथ यात्रा शुरू होने के बाद से अब तक जम्मू के भगवती नगर आधार शिविर से कुल 1,09,128 श्रद्धालु 3,880 मीटर की ऊंचाई पर स्थित पवित्र गुफा मंदिर के लिए रवाना हो चुके हैं।

वार्षिक अमरनाथ यात्रा बहुस्तरीय सुरक्षा व्यवस्था के बीच कराई जा रही है। श्रद्धालुओं की सुरक्षित आवाजाही सुनिश्चित करने के लिए प्रशासन ने जम्मू-श्रीनगर राष्ट्रीय राजमार्ग और यात्रा के दोनों मार्गों पर व्यापक सुरक्षा बलों की तैनाती की है।

शॉर्ट सर्किट से नोएडा की पारस टियारा सोसाइटी की 7वीं मंज़िल पर आग लगी

नई दिल्ली » नसीआर में भीषण गर्मी के बीच रिहायशी इलाकों में आग लगने का सिलसिला थम नहीं रहा है। नोएडा के सेक्टर 137 स्थित 'पारस टिएरा' सोसाइटी में एक फ्लैट की सातवीं मंजिल पर लगे एयर कंडीशनर (AC) में अचानक शॉर्ट सर्किट होने से भीषण आग लग गई। आग की लपटें देखकर सोसाइटी के निवासियों में हड़कंप मच गया और अफरातफरी का माहौल बन गया। हालांकि, इस हादसे में कोई हताहत नहीं हुआ है।

शुरुआती जानकारी के मुताबिक, आग रिहायशी टावर की सातवीं मंजिल पर एक फ्लैट के बाहरी हिस्से में लगे एसी यूनिट से शुरू हुई थी। आसमान में धुआं और लपटें उठती देख सोसाइटी के मेंटेनेंस स्टाफ ने बिना वक्त गंवाए तुरंत मोर्चा संभाला। दमकल विभाग के पहुंचने से पहले ही मेंटेनेंस टीम ने सोसाइटी के फायर फाइटिंग सिस्टम की मदद से आग पर पूरी तरह काबू पा लिया।

सोनम वांगचुक का भावुक संदेश

20 जुलाई को नहीं आए तो भूत बनकर लौटूंगा

एजेंसी » नई दिल्ली

जलवायु कार्यकर्ता सोनम वांगचुक ने शुक्रवार को कहा कि वे किसी भी हाल में 20 जुलाई तक जीवित रहेंगे। उनकी अनिश्चितकालीन भूख हड़ताल का आज 20वां दिन है, जबकि डॉक्टरों ने चेतावनी दी है कि लंबे समय से चल रहा उनका उपवास गंभीर स्थिति में पहुँच गया है। परीक्षा में कथित अनियमितताओं को लेकर जंतर-मंतर पर कॉकरोच जनता पार्टी (CJP) का विरोध प्रदर्शन 28वें दिन में प्रवेश कर गया है। वांगचुक ने 20 जुलाई को संसद तक संगठन के प्रस्तावित मार्च में बड़ी संख्या में लोगों के शामिल होने की अपील की है।

विरोध प्रदर्शन वाली जगह पर समर्थकों को संबोधित करते हुए वांगचुक ने माना कि उनकी शारीरिक हालत कमज़ोर हो गई है, लेकिन कहा कि उनका संकल्प मज़बूत बना हुआ है। उन्होंने कहा कि मैं बाहर से कमज़ोर हूँ लेकिन अंदर से बहुत मज़बूत हूँ। मुझे यकीन है कि आप सभी अंदर और बाहर, दोनों तरह से मज़बूत हैं। हमें इस ऊर्जा की 20 जुलाई के लिए ज़रूरत है, जब हम संसद तक शांतिपूर्ण मार्च निकालेंगे। हम सब साथ मिलकर लोकतंत्र के मंदिर में अपनी बात रखेंगे। उन्होंने कहा कि मैं किसी भी कीमत पर 20 जुलाई तक ज़िंदा रहूँगा। अगर आप नहीं आए और 20 जुलाई का कार्यक्रम सफल नहीं हुआ, तो मैं भूत बनकर वापस आऊँगा।

राजनाथ सिंह ने बीआरओ को सराहा, कहा- विकास की एक नई मिसाल

नई दिल्ली » रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने गुरुवार को बॉर्डर रोड्स ऑर्गनाइज़ेशन

(बीआरओ) की ओर से आयोजित 'स्ट्रैटेजिक इंफ्रास्ट्रक्चर कॉन्क्लेव' को संबोधित किया और संगठन के साढ़े छह दशकों के योगदान की सराहना की। उन्होंने कहा कि पिछले साढ़े छह दशकों में, संगठन ने सचमुच अपने आदर्श वाक्य, 'कड़ी मेहनत से सब कुछ संभव है' को साकार किया है। अटल टनल और सेला टनल जैसे प्रोजेक्ट्स का ज़िक्र करते हुए उन्होंने कहा कि जिस तेज़ी से आप अब सबसे मुश्किल इलाकों और ऊंचे पहाड़ों पर सड़कें और हाईवे बना रहे हैं, वैसी तेज़ी हमारे इतिहास में पहले कभी नहीं देखी गई।

महाप्रभु जगन्नाथ को सुप्रीम कोर्ट से बड़ी राहत रथ यात्रा के बाद रिलीज के लिए मिली मंजूरी

एजेंसी » नई दिल्ली

सुप्रीम कोर्ट ने शुक्रवार, 17 जुलाई को चल रही भगवान जगन्नाथ रथ यात्रा के दौरान एनिमेटेड फ़िल्म 'महाप्रभु जगन्नाथ' को तुरंत रिलीज़ करने की अनुमति देने से इनकार कर दिया। हालाँकि, कोर्ट ने फ़िल्म बनाने वालों को सालाना उत्सव के खत्म होने के बाद, यानी 28 जुलाई या उसके बाद फ़िल्म रिलीज़ करने की इजाज़त दे दी। सुप्रीम कोर्ट ने केंद्र, ओडिशा सरकार, सेंट्रल बोर्ड ऑफ़ फ़िल्म सर्टिफ़िकेशन (CBFC), श्री जगन्नाथ मंदिर प्रशासन और अन्य पक्षों को नोटिस जारी किए। ये नोटिस ओडिशा हाई कोर्ट के उस अंतरिम आदेश को चुनौती देने वाली अपील पर जारी

किए गए, जिसमें फ़िल्म की रिलीज़ पर रोक लगा दी गई थी।

सूत्रों के अनुसार, हाई कोर्ट ने फ़िल्म की रिलीज़ पर रोक लगा दी थी। कोर्ट का मानना था कि फ़िल्म में भगवान जगन्नाथ को दिखाए जाने के तरीके पर जो आपत्तियां उठाई गई हैं, उनकी स्क्रीनिंग से पहले विस्तृत न्यायिक जांच ज़रूरी है। यह फ़िल्म मूल रूप से 17 जुलाई को सिनेमाघरों में रिलीज़ होने वाली थी। फ़िल्म की दिल्ली में होने वाली स्क्रीनिंग, जो गुरुवार, 16 जुलाई को तय थी, उसे भी टाल दिया गया। भारत के मुख्य न्यायाधीश सूर्य कांत और जस्टिस जॉयमाल्य बागची और वी. मोहना की बेंच हाई कोर्ट के आदेश को चुनौती देने वाली याचिका पर सुनवाई करने के लिए सहमत हो गई। फ़िल्म निर्माताओं की ओर से पेश हुए सीनियर वकील देवदत्त कामत ने तत्काल सुनवाई की मांग की थी। उन्होंने मामले की सुनवाई गुरुवार को करने का अनुरोध किया था, लेकिन बेंच ने इसे शुक्रवार के लिए सूचीबद्ध किया।

वांगचुक से डरते हैं प्रधानमंत्री अन्ना आंदोलन का ज़िक्र करते हुए केजरीवाल ने साधा निशाना

नई दिल्ली » आम आदमी पार्टी के राष्ट्रीय संयोजक अरविंद केजरीवाल गुरुवार को जंतर-मंतर पर CJP के विरोध-प्रदर्शन स्थल पर पहुँचे, ताकि वे सोनम वांगचुक के प्रति एकजुटता ज़ाहिर कर सकें, जो अनिश्चितकालीन भूख हड़ताल पर हैं। वांगचुक को सलाम करते हुए केजरीवाल ने कहा कि यह एक्टिविस्ट देश के छात्रों के लिए अपनी जान दांव पर लगाने को तैयार है और उन्होंने उन्हें अगला शिक्षा मंत्री बनाने का प्रस्ताव भी रखा। केजरीवाल ने कहा कि धर्मेंद्र प्रधान को हटाओ और सोनम वांगचुक को देश का शिक्षा मंत्री बनाओ। केजरीवाल ने अन्ना हजारे के साथ 2011 के अपने आंदोलन को भी याद किया। आप नेता ने कहा कि प्रधानमंत्री को डर है कि वांगचुक क्रांतिकारी काम कर सकते हैं।

योगी आदित्यनाथ ने भरी हुंकार

शामली अब आतंक का नहीं, विकास का प्रतीक

एजेंसी » नई दिल्ली

उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने शुक्रवार को शामली ज़िले में आए बड़े बदलाव पर ज़ोर दिया। उन्होंने कहा कि यह ज़िला कभी अराजकता और डर का केंद्र था, लेकिन अब यहाँ विकास और कनेक्टिविटी का माहौल है। शामली में बोलते हुए उन्होंने याद दिलाया कि एक दशक पहले यह ज़िला आतंक और डर का प्रतीक था, जहाँ बड़े पैमाने पर लोगों का पलायन और गुंडागर्दी होती थी, बुनियादी ढाँचे का विकास रुका हुआ था और सुरक्षा का भी अभाव था। उन्होंने कहा कि दस साल पहले शामली चर्चा का विषय थी; लोग सोचते थे कि शामली ज़िला कहाँ है, क्योंकि यह डर और दहशत का प्रतीक बन गया था। बड़े पैमाने पर पलायन हो रहा था, खुलेआम गुंडागर्दी होती थी और कोई भी सुरक्षित नहीं था। विकास के काम रुक गए थे, युवा निराश थे, किसान आत्महत्या करने को मजबूर थे, महिलाएँ और लड़कियाँ बाहर निकलने से डरती थीं, उद्योग ठप हो गए थे और सड़कें गड्ढों से भरी हुई थीं।

मुख्यमंत्री ने बड़े एक्सप्रेसवे के ज़रिए ज़िले की मौजूदा रणनीतिक कनेक्टिविटी पर ज़ोर दिया और शामली को त्रिवेणी संगम बताया, जहाँ दिल्ली-देहरादून, शामली-अंबाला और शामली-गोरखपुर एक्सप्रेसवे आपस में मिलते हैं। उन्होंने इस प्रगति को देखकर खुशी ज़ाहिर की और इसकी तुलना प्रयागराज के मशहूर त्रिवेणी संगम से की।

स्पोर्ट्स ब्रीफ

रणनीति और प्रदर्शन में हम पीछे रह गए: काइलियन एम्बाप्पे

नई दिल्ली » विश्व कप 2026 के सेमीफाइनल में स्पेन के हाथों मिली हार के बाद फ्रांस की टीम में निराशा साफ दिखाई दी। लगातार तीसरी बार विश्व कप फाइनल में पहुंचने का सपना टूटने के बाद कप्तान किलियन एम्बाप्पे ने माना कि उनकी टीम मैच के दौरान अपनी तय रणनीति पर अमल नहीं कर सकी। उन्होंने स्वीकार किया कि तकनीकी प्रदर्शन, सामूहिक खेल और मिडफील्ड की लड़ाई में स्पेन ने फ्रांस पर पूरी तरह बढ़त बना ली थी। बता दें कि डलास में खेले गए सेमीफाइनल मुकाबले में स्पेन ने फ्रांस को 2-0 से हराकर फाइनल में जगह बना ली।

इंगलैंड की हार पर बेकहम का भावुक बयान, कहा- दिल तोड़ने वाला पल

नई दिल्ली » इंग्लैंड के दिग्गज खिलाड़ी डेविड बेकहम ने बुधवार को अटलांटा में FIFA वर्ल्ड कप 2026 के सेमीफ़ाइनल में अर्जेंटीना से 'थ्री लायंस' (इंग्लैंड टीम) की 2-1 से हार पर दुख जताया, साथ ही टीम के प्रेरणादायक सफ़र और टूर्नामेंट के दौरान बनी यादगार यादों का जश्न भी मनाया। इस नतीजे के साथ अर्जेंटीना वर्ल्ड कप 2026 के फ़ाइनल में पहुँच गया, जहाँ रविवार, 19 जुलाई (स्थानीय समय) को उसका मुक़ाबला स्पेन से होगा, जबकि 1966 के बाद पहली बार वर्ल्ड कप फ़ाइनल में पहुँचने की इंग्लैंड की उम्मीदें दुखद रूप से खत्म हो गईं।

भारत को शुरुआती झटका!

लक्ष्य सेन और आयुष शेट्टी जापान ओपन 2026 से बाहर

एजेंसी » नई दिल्ली

बुधवार को टोक्यो मेट्रोपॉलिटन जिम्नेजियम में हुए बीडब्ल्यूएफ सुपर 750 इवेंट में लक्ष्य सेन और आयुष शेट्टी के पहले राउंड में हारने के साथ ही जापान ओपन 2026 में भारत का पुरुष सिंगल्स का सफर समय से पहले ही खत्म हो गया। Olympics.com के अनुसार, दुनिया के 14वें नंबर के खिलाड़ी लक्ष्य सेन को जापान के कोकी वातानाबे ने 38 मिनट तक चले मैच में सीधे गेम में 21-16, 21-14 से हरा दिया। मैच के दौरान सेन अपनी लय नहीं बना पाए और मिड-गेम ब्रेक के समय 11-6 और 11-5 से पीछे चल रहे थे, जिसके बाद वातानाबे ने आसानी से जीत हासिल कर ली। दुनिया के 17वें नंबर के खिलाड़ी वातानाबे के खिलाफ सेन की यह सातवीं भिड़ंत थी और इसमें उन्हें तीसरी बार हार का सामना करना पड़ा। एक कड़े मुकाबले में, आयुष शेट्टी को थाईलैंड के दुनिया के नंबर 2 खिलाड़ी कुनलावुत वितिदसर्न से तीन गेम (19-21, 25-23, 15-21) में हार का सामना करना पड़ा। पेरिस 2024 ओलंपिक के सिल्वर मेडलिस्ट कुनलावुत ने पहला गेम जीता, हालांकि शेट्टी ने स्कोर 19-19 से बराबर कर लिया था। शेट्टी ने दूसरे गेम में ज़बरदस्त वापसी की; उन्होंने चार मैच पॉइंट बचाते हुए गेम 25-23 से जीता और मैच को निर्णायक गेम तक पहुँचाया। हालाँकि, वह अपनी लय बरकरार नहीं रख सके और कुनलावुत ने आखिरी गेम में फिर से मैच पर पकड़ बना ली, जिससे शेट्टी के खिलाफ उनका हेड-टू-हेड रिकॉर्ड 2-1 हो गया।

महिला सिंगल्स मुक़ाबले में भी भारत के लिए मुश्किलें जारी रहीं, क्योंकि उन्नति हुड्डा शुरुआती दौर में ही चीनी ताइपे की हुआंग यू-हसुन से 16-21, 21-16, 21-15 से हारकर बाहर हो गईं। इन नतीजों के साथ ही जापान ओपन में भारत के पुरुष सिंगल्स खिलाड़ियों का सफ़र खत्म हो गया। दो बार की ओलंपिक मेडलिस्ट पीवी सिंधु मंगलवार को दूसरे राउंड में पहुँचने के बाद महिला सिंगल्स में भारत की एकमात्र खिलाड़ी बची हैं।

इंग्लैंड के खिलाफ जीत के बाद मेसी का बयान- टक्कर की टीम थी

नई दिल्ली » बुधवार को फीफा वर्ल्ड कप 2026 के सेमीफ़ाइनल में अर्जेंटीना ने इंग्लैंड के ख़िलाफ़ पिछड़ने के बाद 2-1 से जीत हासिल की। इसके बाद अर्जेंटीना के कप्तान लियोनेल मेसी ने इंग्लैंड की टीम को शानदार टीम बताया। इस नतीजे के साथ अर्जेंटीना वर्ल्ड कप 2026 के फ़ाइनल में पहुँच गया, जहाँ रविवार, 19 जुलाई (स्थानीय समय) को उसका मुक़ाबला स्पेन से होगा, जबकि 1966 के बाद पहली बार वर्ल्ड कप फ़ाइनल में पहुँचने की इंग्लैंड की उम्मीदें दुखद रूप से खत्म हो गईं। जीत के बाद, मेसी ने कहा कि सेमीफ़ाइनल में इंग्लैंड का सामना करना एक खास चुनौती थी। उन्होंने इंग्लैंड की तारीफ़ करते हुए उन्हें एक मज़बूत टीम बताया, जिसमें टैलेंटेड खिलाड़ी और खेलने का एक बेहतरीन तरीका है। उन्होंने आगे कहा कि यह जानते हुए भी कि मैच मुश्किल होगा, अर्जेंटीना जीतने, अपने फ़ैन्स को ख़ुशी देने और फ़ाइनल में पहुँचने के लिए पूरी तरह तैयार था। 'ला नैसियोन' के अनुसार उन्होंने कहा कि इंग्लैंड के खिलाफ खेलना हमेशा खास होता है क्योंकि सेमीफाइनल का मतलब ही कुछ और होता है।

नैस्कार कप सीरीज

क्षतिग्रस्त कार के बावजूद रयान ब्लेनी ने जीता अटलांटा मुकाबला

एजेंसी » नई दिल्ली

अटलांटा में खेली गई नैस्कार कप सीरीज की रेस रोमांच, बारिश और रणनीति से भरपूर रही। लंबे मौसम व्यवधान के बावजूद टीम पेंस्के के चालक रायन ब्लेनी ने शानदार प्रदर्शन करते हुए यादगार जीत अपने नाम कर ली। पोल पोजीशन से शुरुआत करने वाले ब्लेनी ने पूरी रेस में दबदबा बनाए रखा और अतिरिक्त समय तक पहुंचे मुकाबले में अंतिम लैप पर शानदार नियंत्रण दिखाकर पहला स्थान हासिल किया है।

मौजूद जानकारी के अनुसार बारिश और बिजली गिरने की आशंका के कारण रेस करीब तीन घंटे नौ मिनट तक रुकी रही। इसके बाद मुकाबला दोबारा शुरू हुआ और देर रात समाप्त हुआ। मौसम की चुनौती के बावजूद ब्लेनी का प्रदर्शन पूरे समय प्रभावशाली रहा और उन्होंने दोनों शुरुआती चरणों में भी जीत दर्ज की है। गौरतलब है कि ब्लेनी ने रेस के दौरान कुल 171 लैप में बढ़त बनाए रखी। हालांकि समाप्ति से 29 लैप पहले उनकी कार दीवार से हल्के तौर पर टकरा गई थी। इस दौरान कार के दाहिने हिस्से को नुकसान पहुंचने की आशंका थी और ब्लेनी ने अपनी टीम को तेज कंपन महसूस होने की जानकारी भी दी थी। इसके बावजूद टीम ने कार को पिट में बुलाने के बजाय ट्रैक पर बनाए रखने का फैसला किया, जो अंत में पूरी तरह सफल साबित हुआ है। अंतिम लैप में ब्लेनी को बुब्बा वालेस और क्रिस्टोफर बेल से कड़ी चुनौती मिली।

अर्जेंटीना के राष्ट्रपति नहीं जाएंगे न्यू जर्सी, अंधविश्वास के कारण घर पर ही देखेंगे विश्व कप फ़ाइनल

एजेंसी » नई दिल्ली

अर्जेंटीना के राष्ट्रपति जेवियर मिलेई ने बृहस्पतिवार को कहा कि वह अंधविश्वास के कारण विश्व कप फाइनल देखने के लिए न्यू जर्सी नहीं जाएंगे और उनकी टीम का रविवार को स्पेन के खिलाफ होने वाला खिताबी मुकाबला घर में बैठकर ही देखेंगे। उन्होंने अर्जेंटीना के पिछले सातों मैच भी घर से ही देखे थे। मौजूदा चैंपियन इन सभी मैच में जीत हासिल करने में सफल रहा था। इन मैच के दौरान मिलेई ने एक खास जैकेट पहनी थी और उन्होंने कहा कि फाइनल के दिन भी वह इसी जैकेट

को पहनकर मैच देखेंगे। अर्जेंटीना लगातार दूसरी बार खिताब जीतने के लिए इस मैच में खेलेगा। दुनिया भर के प्रशंसक और खिलाड़ी अंधविश्वासों पर भरोसा करते हैं, जिनके बारे में उनका मानना है कि वे उनकी टीम की किस्मत बदल सकते हैं।

लेकिन लैटिन अमेरिका विशेष रूप से अर्जेंटीना में तथाकथित 'काबालास' यानी अनुष्ठानिक विश्वास और आदतें बेहद महत्व रखती हैं। मिलेई से जब पूछा गया कि क्या वह रविवार के मैच को देखने के लिए अपने करीबी सहयोगी अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप और फीफा अध्यक्ष जियानी इन्फेंटिनो के साथ न्यू जर्सी की यात्रा करेंगे, उन्होंने कहा, ''बिल्कुल नहीं। मैं पिछले मैचों की तरह यह मैच भी ओलिवोस (अर्जेंटीना का राष्ट्रपति निवास) से ही देखूंगा।'' पत्रकार ने उनसे पूछा कि क्या वह अंधविश्वास के चलते घर पर रह रहे हैं। मिलेई ने 'हां' में जवाब दिया।

जापान ओपन में हान यू को हराकर अंतिम पड़ाव में पहुंचीं पीवी सिंधु

नई दिल्ली » दो बार की ओलंपिक मेडलिस्ट और पांच बार की बीडब्ल्यूएफ वर्ल्ड चैंपियनशिप मेडलिस्ट पीवी सिंधु ने गुरुवार को बीडब्ल्यूएफ सुपर 750 टूर्नामेंट, डाइहात्सु जापान ओपन 2026 में वर्ल्ड नंबर 5 हान यू के खिलाफ सीधे गेम में जीत हासिल की। एक विज्ञप्ति के अनुसार, क्वार्टर फ़ाइनल में पहुँचने के बाद सिंधु शुक्रवार को सेमीफ़ाइनल में जगह बनाने के लिए जापान की पूर्व वर्ल्ड नंबर 1 नोज़ोमी ओकुहारा से मुक़ाबला करेंगी। सिंधु ने पहले गेम में शुरुआती बढ़त बनाकर और 21-16 से जीतकर अपने बेहतर हेड-टू-हेड रिकॉर्ड को और बेहतर किया।

लैंडो नॉरिस की मुश्किलें बढ़ीं, बेल्जियन ग्रां प्री में इंजन सुधार के चक्कर में मिली 10-स्थान की ग्रिड पेनल्टी

एजेंसी » नई दिल्ली

बेल्जियम ग्रां प्री शुरू होने से पहले मैकलारेन टीम और उसके चालक लैंडो नॉरिस के लिए एक अहम फैसला सामने आया है। टीम ने अपनी कार की तकनीकी विश्वसनीयता को बेहतर बनाने के उद्देश्य से नई पावर इलेक्ट्रॉनिक्स इकाई लगाने का निर्णय लिया है। हालांकि इस बदलाव की कीमत नॉरिस को 10 स्थान की ग्रिड पेनाल्टी के रूप में चुकानी पड़ेगी। बता दें कि मौजूदा सत्र में मैकलारेन को कई बार तकनीकी समस्याओं का सामना करना पड़ा है, जिसका असर नॉरिस के प्रदर्शन पर भी देखने को मिला है। मौजूद जानकारी के

अनुसार, फॉर्मूला वन नियमों के तहत किसी चालक द्वारा निर्धारित सीमा से अधिक पावर यूनिट के हिस्सों का उपयोग करने पर अगले मुकाबले में ग्रिड पेनाल्टी दी जाती है। इसी नियम के चलते बेल्जियम ग्रां प्री में लैंडो नॉरिस 10 स्थान पीछे से दौड़ शुरू करेंगे। टीम का मानना है कि स्पा-फ्रैंकोरशॉम्प सर्किट पर ओवरटेक करना अपेक्षाकृत आसान रहता है, इसलिए इस ट्रैक पर यह पेनाल्टी झेलना आगे के मुकाबलों की तुलना में बेहतर विकल्प है।

गौरतलब है कि इस सत्र में नॉरिस की कार को कई बार तकनीकी दिक्कतों का सामना करना पड़ा है। चीन ग्रां प्री में पहली पावर इलेक्ट्रॉनिक्स इकाई पूरी तरह खराब हो गई थी, जिसके कारण वह दौड़ शुरू ही नहीं कर सके थे। इसके बाद जापान में लगाई गई दूसरी इकाई में अभ्यास सत्र के दौरान समस्या आ गई थी और उसे हटाना पड़ा था। बाद में उसकी मरम्मत की गई, लेकिन मोनाको में वह फिर से खराब हो गई। इसके बाद टीम को तीसरी और अंतिम स्वीकृत इकाई का उपयोग करना पड़ा था।

नया प्रोजेक्ट

सीनियर एक्ट्रेस ने जताई अपनी पसंद

दीपिका पादुकोण बनेंगी हेमा मालिनी की बायोपिक में 'ड्रीम गर्ल'?

बॉलीवुड की एवरग्रीन 'ड्रीम गर्ल' और दिग्गज राजनेता हेमा मालिनी पिछले छह दशकों से सिनेमा प्रेमियों के दिलों पर राज कर रही हैं। हाल ही में उन्होंने फिल्म इंडस्ट्री में अपने बेमिसाल 60 साल पूरे होने का जश्न (डायमंड जुबली) मनाया। इस खास मौके पर जब उनसे उनकी बायोपिक को लेकर सवाल किया गया, तो उन्होंने मौजूदा दौर की एक टॉप एक्ट्रेस को अपनी भूमिका के लिए सबसे उपयुक्त बताया।

» **दीपिका पादुकोण को लेकर क्या बोलीं हेमा मालिनी?** डायमंड जुबली सेलिब्रेशन के दौरान जब हेमा मालिनी से पूछा गया कि अगर भविष्य में कभी उनकी जिंदगी पर बायोपिक बनती है, तो क्या इस रोल के लिए दीपिका पादुकोण सही पसंद होंगी? इस पर सीनियर एक्ट्रेस ने खुलकर जवाब दिया। हेमा मालिनी ने कहा, अगर वह चाहें, तो बिल्कुल कर सकती हैं। वैसे तो कोई भी कर सकता है, लेकिन दीपिका एक बेहद खूबसूरत और बेहतरीन टैलेंटेड लड़की हैं। हेमा और दीपिका के बीच अच्छे संबंध हैं। 2015 में, इस सीनियर एक्ट्रेस ने राम कमल मुखर्जी की लिखी अपनी बायोग्राफी 'हेमा मालिनीः बियॉन्ड द ड्रीम गर्ल' (जो 2017 में आई थी) को लॉन्च करने के लिए दीपिका को चुना था। दोनों एक्ट्रेस के बीच एक और दिलचस्प कनेक्शन है। दीपिका ने अपने बॉलीवुड डेब्यू 'ओम शांति ओम' में जो दो रोल निभाए थे, उनमें से एक हेमा मालिनी से प्रेरित था। फिल्म में उनके किरदार, शांतिप्रिया, को 'ड्रीम गर्ल' कहा गया था - यह टाइटल 1970 और 1980 के दशक से ही हेमा मालिनी के साथ जुड़ा हुआ है।

» **हेमा मालिनी ने अपने डायमंड जुबली सेलिब्रेशन के बारे में बात की...** फिल्म इंडस्ट्री में अपने 60 साल पूरे होने के जश्न के बाद हेमा मालिनी ने X पर एक पोस्ट भी शेयर किया। उन्होंने लिखा, 'कितना यादगार और शानदार ढंग से आयोजित इवेंट था। फिल्म इंडस्ट्री में मेरे सालों का जश्न (डायमंड जुबली) इतनी धूमधाम और भव्यता के साथ मनाया गया कि यह सचमुच अविश्वसनीय था।' उन्होंने आगे कहा, 'ऑडिटोरियम में मौजूद शानदार दर्शक मेरी फिल्मों के संगीत में पूरी तरह खोए हुए लग रहे थे और वे आखिर तक वहीं रुके रहे।'

शाहरुख को सुप्रीम कोर्ट से राहत, 'मन्नत' के रेनोवेशन के खिलाफ याचिका खारिज

बॉलीवुड के 'किंग खान' यानी शाहरुख खान और उनके परिवार के लिए देश की सर्वोच्च अदालत से एक बड़ी और राहत भरी खबर आई है। सुप्रीम कोर्ट ने मंगलवार (14 जुलाई, 2026) को शाहरुख और गौरी खान के मुंबई स्थित मशहूर बंगले 'मन्नत' के रेनोवेशन (नवीनीकरण) के लिए मिली प्रशासनिक मंजूरी को चुनौती देने वाली याचिका को सिरे से खारिज कर दिया है। बांद्रा बैंडस्टैंड स्थित 'मन्नत' न केवल शाहरुख खान का आशियाना है, बल्कि यह मुंबई के सबसे बड़े लैंडमार्क्स में से एक है, जहां रोजाना देश-विदेश से हजारों प्रशंसकों की भीड़ जुटती है।

'अल्फा', 'वेलकम टू द जंगल' सहित कई फिल्मों को छोड़ा पीछे

'धमाल 4' का सोमवार को बॉक्स ऑफिस पर दबदबा!

सिनेमाघरों में इस समय कॉमेडी, एक्शन, हॉरर और रोमांस का दिलचस्प मुकाबला देखने को मिल रहा है। लेकिन सोमवार के अहम 'मंडे टेस्ट' में बाजी पूरी तरह से कॉमेडी फिल्म के हाथ रही। जहां एक तरफ नई रिलीज 'धमाल 4' ने बॉक्स ऑफिस पर अपनी मजबूत पकड़ बरकरार रखी है, वहीं आलिया भट्ट स्टारर स्पाई-एक्शन ड्रामा 'अल्फा' की कमाई में रिलीज के 11वें दिन भारी गिरावट दर्ज की गई है। इसके साथ ही 'वेलकम टू द जंगल' और 'कॉकटेल 2' भी अपनी आखिरी सांसें गिनते हुए धीरे-धीरे आगे बढ़ रही हैं।

» **'अल्फा' का बॉक्स ऑफिस कलेक्शन...** 'अल्फा' ने सोमवार को (सिनेमाघरों में 11वें दिन) 75 लाख रुपये कमाए, जबकि रविवार को इसकी कमाई 2.25 करोड़ रुपये थी। शिव रवैल द्वारा निर्देशित और आलिया भट्ट व शरवरी अभिनीत इस फिल्म ने अब तक 54.35 करोड़ रुपये कमाए हैं। 11वें दिन तक फिल्म की रोज़ाना कमाई घटकर लाख रुपये के दायरे में आ गई थी।

» **'वेलकम टू द जंगल' का बॉक्स ऑफिस कलेक्शन...** 'वेलकम टू द जंगल' अहमद खान द्वारा निर्देशित एक मल्टी-स्टारर कॉमेडी फिल्म है। रिपोर्ट के अनुसार, फिल्म ने 18वें दिन 55 लाख रुपये कमाए, जबकि 17वें दिन इसकी कमाई 1.90 करोड़ रुपये थी। इसका कुल बॉक्स ऑफिस कलेक्शन अब 130.10 करोड़ रुपये हो गया है। फिल्म में अक्षय कुमार, सुनील शेट्टी, परेश रावल, अरशद वारसी, जैकी श्रॉफ, जॉनी लीवर, राजपाल यादव, दिशा पटानी, जैकलीन फर्नांडीज, रवीना टंडन, लारा दत्ता, फरीदा जलाल और कई अन्य कलाकार शामिल हैं।

'धमाल 4' का बॉक्स ऑफिस कलेक्शन फ़िल्मऔर टीवी उद्योग...

रिपोर्ट के अनुसार, 'धमाल 4' ने चौथे दिन (सोमवार) 8.35 करोड़ रुपये कमाए, जबकि रविवार को इसने 28.50 करोड़ रुपये कमाए थे। फिल्म का कुल कलेक्शन अब 73.35 करोड़ रुपये तक पहुंच गया है। इंद्र कुमार द्वारा निर्देशित इस कॉमेडी फिल्म में अजय देवगन के साथ कई अन्य कलाकार भी हैं।

करोड़ों की प्रॉपर्टी में किया बड़ा निवेश

अयोध्या के बाद रणबीर कपूर ने पुणे में खरीदे चार प्लॉट

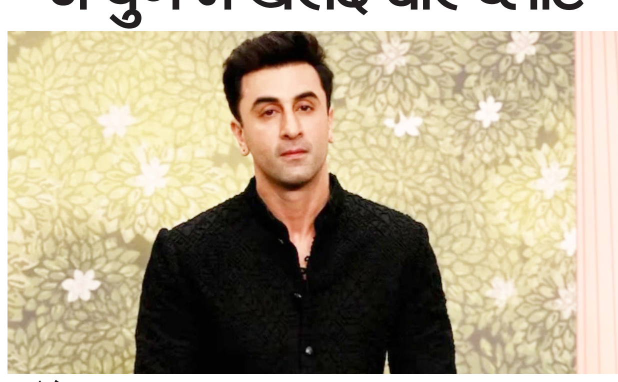

बॉलीवुड अभिनेता रणबीर कपूर एक बार फिर चर्चा में हैं। अयोध्या में निवेश के बाद उन्होंने अब पुणे में चार प्लॉट खरीदकर रियल एस्टेट में बड़ा निवेश किया है। रिपोर्ट के अनुसार पहला प्लॉट लगभग 21,400 वर्गमीटर क्षेत्र में फैला है जिसकी कीमत करीब 3.31 करोड़ रुपये बताई गई है। इसके लिए लगभग 16.59 लाख रुपये की स्टाम्प ड्यूटी चुकाई गई।

दूसरा प्लॉट करीब 29,900 वर्गमीटर का है जिसकी कीमत लगभग 4.62 करोड़ रुपये है। इस संपत्ति के लिए रणबीर कपूर ने करीब 23.13 लाख रुपये की स्टाम्प ड्यूटी अदा की।

तीसरा और सबसे बड़ा प्लॉट लगभग 43,800 वर्गमीटर में फैला है। इसकी कीमत करीब 7.08 करोड़ रुपये बताई जा रही है, जबकि इसकी रजिस्ट्री पर लगभग 35.40 लाख रुपये की स्टाम्प ड्यूटी दी गई। चौथा प्लॉट लगभग 8,900 वर्गमीटर का है जिसकी कीमत करीब 1.40 करोड़ रुपये है। इस पर करीब 7 लाख रुपये की स्टाम्प ड्यूटी का भुगतान किया गया।

वर्कफ्रंट की बात करें तो रणबीर कपूर जल्द ही नितेश तिवारी की फिल्म 'रामायण' में भगवान श्रीराम की भूमिका निभाते नजर आएंगे। फिल्म में साई पल्लवी माता सीता की भूमिका निभा रही हैं और इसका ट्रेलर 24 जुलाई को रिलीज होने की उम्मीद है।

अलौकिक थ्रिलर से करेंगी डेब्यू

प्रियंका-दीपिका के बाद दिशा पाटनी की हॉलीवुड में एंट्री

बॉलीवुड एक्ट्रेस दिशा पाटनी अपनी अदाकारी का जलवा बिखरने के बाद जल्द ही हॉलीवुड में तहलका मचाने जा रही हैं। हाल ही एक मीडिया इंटरव्यू के दौरान दिशा ने हॉलीवुड में डेब्यू को लेकर खुलकर अपनी बात रखी और बताया कि किस तरह से उनके हाथ ये विदेशी मूवी आई है। भारतीय सिनेमा में अपनी पहचान बना चुकी अभिनेत्री दिशा पाटनी अब हॉलीवुड में कदम रखने जा रही हैं। प्रियंका चोपड़ा, दीपिका पादुकोण, अली फजल और अनुपम खेर के बाद वह भी हॉलीवुड में अपनी टैलेंट का प्रदर्शन करेंगी। दिशा की पहली हॉलीवुड फिल्म सुपरनैचुरल थ्रिलर 'हॉलीगार्ड्स सागाः द पोर्टल ऑफ फोर्स' होगी, जिसका निर्देशन ऑस्कर पुरस्कार विजेता केविन स्पेसी कर रहे हैं। इस परियोजना के माध्यम से दिशा वैश्विक दर्शकों के बीच अपनी नई पहचान बनाने के लिए तैयार हैं।

हालिए एक इंटरव्यू में दिशा ने अपने हॉलीवुड सफर को लेकर बात की है। उन्होंने कहा- यह काफी हद तक इस बात पर निर्भर करता है कि आप कहां तक पहुंच पाते हैं। पश्चिमी देशों का सिनेमा ऑडिशन पर बहुत ज्यादा निर्भर करता है। वहां काम पाने के लिए आपको ऑडिशन देना पड़ता है। इसमें किस्मत भी बड़ी भूमिका निभाती है कि कभी-कभी, वे (हॉलीवुड फिल्ममेकर) बस आपका पिछला काम देखते हैं और आपको प्रोजेक्ट या ऑडिशन का प्रस्ताव देते हैं।

शाहरुख खान की 'किंग' और हॉलीवुड की 'एवेंजर्स' से होगी सीधी टक्कर

खून से लथपथ प्रभास की फिल्म 'फ़ौजी' का पहला लुक आउट

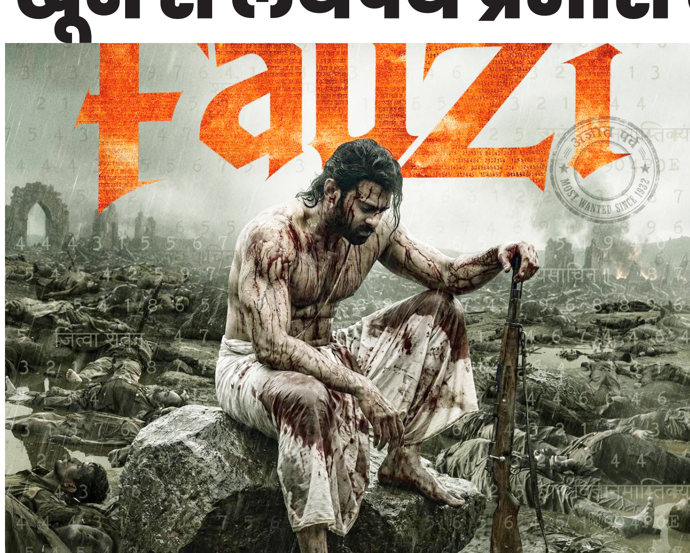

पैन-इंडिया सुपरस्टार प्रभास के फैंस के लिए एक बहुत बड़ी खुशखबरी है। 'बाहुबली' फ्रेंचाइजी के बाद प्रभास एक बार फिर एक भव्य पीरियड ड्रामा के साथ बड़े पर्दे पर आग लगाने के लिए तैयार हैं। उनकी बहुप्रतीक्षित फिल्म 'फ़ौजी' (Fauji) का पहला बेहद आक्रामक पोस्टर और रिलीज की तारीख आधिकारिक तौर पर सामने आ चुकी है। हनु राघवपुडी के निर्देशन में बन रही इस फिल्म को 'मैथ्री मूवी मेकर्स' प्रोड्यूस कर रहे हैं। यह फिल्म 3 दिसंबर 2026 को दुनिया भर के सिनेमाघरों में रिलीज होगी। बॉक्स ऑफिस के लिहाज से दिसंबर 2026 का महीना ऐतिहासिक होने वाला है, क्योंकि इसी दौरान बॉलीवुड में शाहरुख खान की 'किंग' और हॉलीवुड की महा-फिल्म 'एवेंजर्सः डूम्सडे' भी दस्तक देने वाली हैं।

» **रोंगटे खड़े कर देने वाला है 'फ़ौजी' का पोस्टर...** प्रभास ने अपने सोशल मीडिया अकाउंट पर फिल्म का पहला पोस्टर शेयर करते हुए लिखा, अज्ञातपर्व खत्म हुआ। पोस्टर में प्रभास का एक ऐसा अवतार दिख रहा है जो फैंस के रोंगटे खड़े कर देने के लिए काफी है। पोस्टर में प्रभास पूरी तरह खून से सने हुए हैं और तबाही से भरे युद्ध के मैदान के बीच एक चट्टान पर बैठे हैं। उनके चारों ओर लाशों का ढेर लगा है और हाथ में बंदूक थमी है। पोस्टर पर दी गई टैगलाइन—एक बटालियन जो अकेले लड़ती है—साफ इशारा करती है कि फिल्म में एक्शन और देशभक्ति का पैमाना बेहद विशाल और गंभीर होने वाला है। फिल्ममेकर हनु राघवपुडी ने पोस्टर शेयर करते हुए लिखा, 3 दिसंबर 2026 को फ़ौजी का मार्च शुरू होगा। आइए एक ऐसी कहानी देखें जो न सिर्फ़ बड़े पर्दे पर दिखेगी, बल्कि उन सभी लोगों के दिलों में भी बसेगी जो हिम्मत, सम्मान और आज़ादी में यकीन रखते हैं।

» **'सीता रामम' के डायरेक्टर और 'पुष्पा' के मेकर्स का साथ...** 'फ़ौजी' की शूटिंग अगस्त 2024 में शुरू हुई थी और इसे मेकर्स के सबसे महत्वाकांक्षी प्रोजेक्ट्स में से एक माना जा रहा है। इस फिल्म से जुड़े बड़े नाम इसकी भव्यता की गारंटी देते हैं:

- **कास्टः** प्रभास के साथ इस फिल्म में बॉलीवुड के दिग्गज अभिनेता मिथुन चक्रवर्ती और अनुपम खेर भी मुख्य भूमिकाओं में नज़र आएंगे।
- **क्रूः** फिल्म का निर्देशन हनु राघवपुडी कर रहे हैं, जो इससे पहले ब्लॉकबस्टर लव-स्टोरी 'सीता रामम' बना चुके हैं। फिल्म को 'पुष्पा' फेम बैनर 'मैथ्री मूवी मेकर्स' का सपोर्ट मिला है और टी-सीरीज़ (T-Series) इसे पेश कर रही है। नवीन येरनेनी, वाई. रवि शंकर और भूषण कुमार इसके प्रोड्यूसर्स हैं।

» बॉलीवुड न्यूज

रीना, किरण हो या गौरी, किसी ने भी नहीं बदला अपना धर्मः आमिर खान

» एक मुस्लिम धार्मिक गुरु द्वारा अंतरधार्मिक विवाह (विभिन्न धर्मों के बीच शादी) पर आपत्ति जताए जाने के बाद, बॉलीवुड अभिनेता आमिर खान ने गौरी स्प्राट के साथ अपनी हालिया शादी को लेकर हो रही आलोचनाओं पर अपनी चुप्पी तोड़ी है। एक्टर ने स्पष्ट शब्दों में कहा है कि उनका परिवार हमेशा से बेहद समावेशी रहा है और उनके जीवन में आई किसी भी महिला ने शादी के बाद अपना धर्म नहीं बदला है। एक हालिया इंटरव्यू में आमिर खान ने खुद पर लगे आरोपों को सिरे से खारिज करते हुए अपने पारिवारिक माहौल पर बात की। उन्होंने कहा, सच तो यह है कि हमारा परिवार बहुत समावेशी है। मेरी दोनों बहनों की शादी हिंदुओं से हुई है; मेरी बेटी की शादी भी एक हिंदू से हुई है। मेरे कजिन मंसूर की शादी एक ईसाई महिला से हुई है। आमिर ने साफ किया कि उनके परिवार में अलग-अलग धर्मों में शादियां होना एक आम बात है, जो हमेशा आपसी सम्मान पर आधारित रही हैं, न कि धर्म परिवर्तन पर। अपनी पत्नियों के धर्म परिवर्तन की खबरों पर रोक लगाते हुए आमिर खान ने कहा, गौरी, किरण या रीना, किसी ने भी अपना धर्म नहीं बदला, क्योंकि हमारी शादियां सिविल मैरिज (स्पेशल मैरिज एक्ट के तहत कानूनी शादी) थीं। गौरी हिंदू भी नहीं हैं, वह ईसाई हैं, और वह भी ऐसी ईसाई जो धर्म का बहुत पालन नहीं करतीं।

थलपति विजय की फिल्म 'जना नायकन' 23 जुलाई को होगी रिलीज

» तमिलनाडु के मुख्यमंत्री और सिनेमा जगत के दिग्गज अभिनेता थलपति विजय की बहुप्रतीक्षित फिल्म 'जना नायकन' की रिलीज को लेकर चल रहा सस्पेंस आखिरकार खत्म हो गया है। कई बार देरी और हफ्तों की अटकलों के बाद, मेकर्स ने आधिकारिक तौर पर फिल्म की दुनिया भर में रिलीज की तारीख की घोषणा कर दी है। थलपति विजय ने खुद सोशल मीडिया पर फिल्म का एक बेहद प्रभावशाली नया पोस्टर शेयर करते हुए बताया है कि यह तमिल एक्शन-ड्रामा फिल्म 23 जुलाई, 2026 को सिनेमाघरों में दस्तक देगी। रिलीज डेट के साथ जारी किए गए नए पोस्टर को बेहद खास अंदाज में डिजाइन किया गया है, जिसमें 23 जुलाई, 2026 की तारीख को बैकग्राउंड में शामिल किया गया है। पोस्टर में विजय खाकी पुलिस की वर्दी पहने हुए एक रौबदार और शक्तिशाली लुक में नजर आ रहे हैं। उनका यह प्रभावशाली अवतार सोशल मीडिया पर तेजी से वायरल हो रहा है और प्रशंसकों के बीच फिल्म को लेकर उत्सुकता चरम पर पहुंच गई है।

लॉकअप 2: आकांक्षा चमोला और पामेला सेरेन की नजदीकियों पर भड़के लोग

» बॉलीवुड ए रियलिटी शो लॉकअप 2 अपनी बोल्डनेस की वजह से सोशल मीडिया पर लगातार ट्रेंड कर रहा है। शो में सेक्सुअलिटी और रिलेशनशिप्स जैसे टॉपिक्स पर खुलकर बात हो रही है, और मेकर्स भी इसे बिना किसी फिल्टर या एडिट के दिखा रहे हैं। हाल ही में, कंटेस्टेंट आकांक्षा चमोला ने अपनी सेक्सुअलिटी को लेकर बड़ा खुलासा किया था। इसके बाद से ही शो में उनकी और पामेला सेरेन की क्लोजनेस बढ़ती जा रही है। हाल ही में पामेला ने आकांक्षा को किस किया था और अब दोनों का एक नया वीडियो सामने आया है। मेकर्स ने अब आकांक्षा और पामेला को एक ही सेल में शिफ्ट कर दिया है, जिसके बाद दोनों का एक वीडियो इंटरनेट पर जमकर वायरल हो रहा है। इस वीडियो में आकांक्षा, पामेला को बॉडी मसाज देती नजर आ रही हैं। पामेला बेड पर उल्टी लेटी हुई हैं और आकांक्षा उनके ऊपर बैठकर उन्हें रिलैक्स कर रही हैं। मसाज के दौरान पामेला अपने टॉप को कंधों से थोड़ा नीचे कर लेती हैं। दोनों की इस ट्यूनिंग को देखकर वहां मौजूद शिल्पा शिंदे भी पूरी तरह हैरान रह गईं।

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक एवं संपादक कलासो देवी के द्वारा सूचना प्रिंटर, 33 एस मॉडल टाउन मार्केट हिसार, हरियाणा से मुद्रित करवाकर बाला जी सेनेटरी स्टोर, करनाल रोड, डिफेंस कॉलोनी, गली नंबर-8, रिलायंस स्मार्ट पॉइंट के पास, कैथल से प्रकाशित। संपादक कलासो देवी। किसी भी विवाद के लिए न्याय क्षेत्र कैथल होगा। RNI No. HRHIN/26/A1127, मोबाइल नंबरः 9499422208, Email: Info@hindustanekta.com